प्रीतिरसावतार महाभावनिमग्न
श्रीराधा बाबा

(प्रथम भाग)

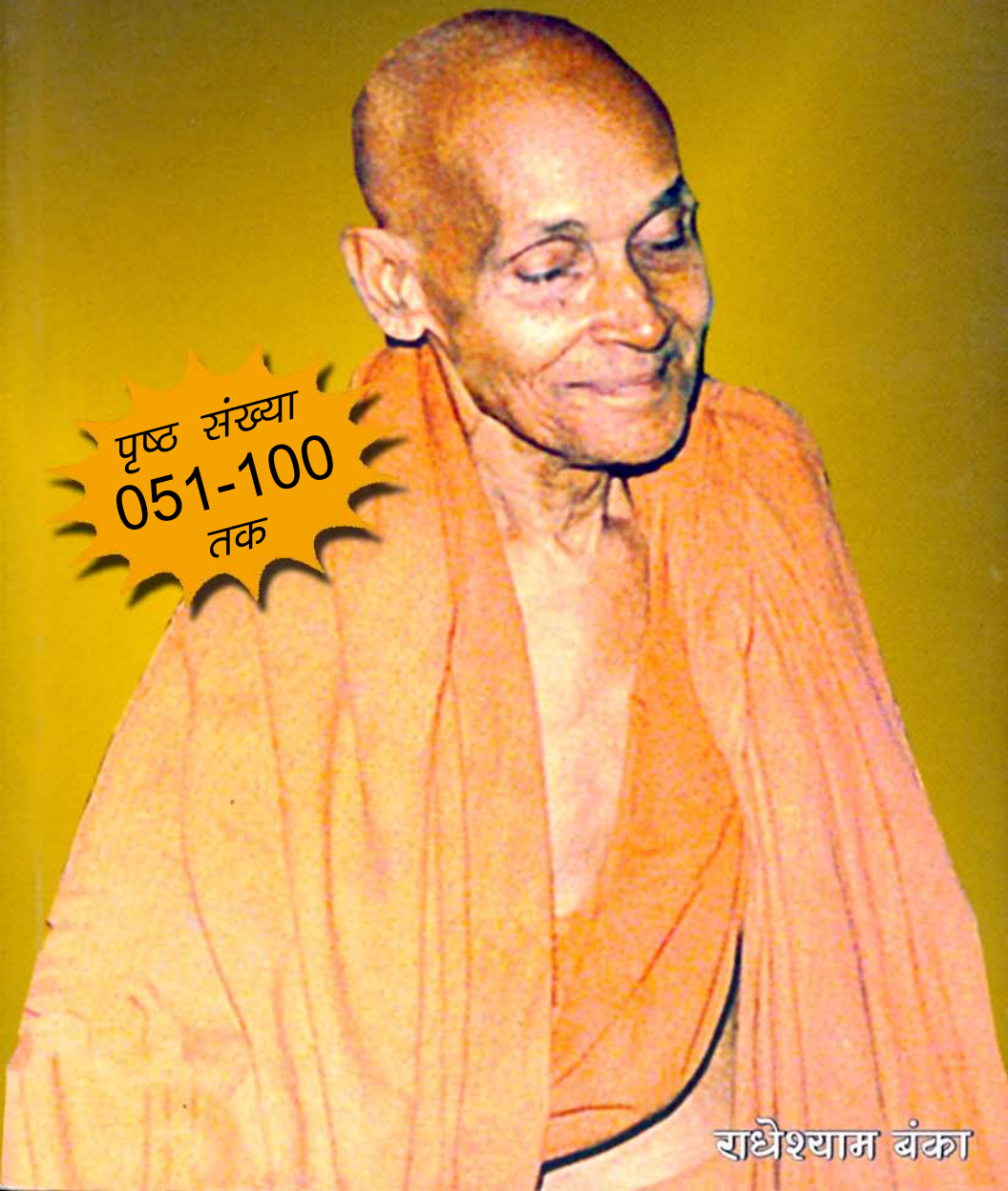

पृष्ठ संख्या
051-100
तक

राधेश्याम बंका

छेड़ रखा था। लोगोंमें अँगरेजी सरकारके विरुद्ध जोश फैला हुआ था और चारों ओर विदेशी वस्तुओंका बहिष्कार किया जा रहा था। सरकार स्थान-स्थानपर काँग्रेसियोंको गिरफ्तार कर रही थी। जब गया काँग्रेस कमेटीके सहायक मन्त्री गिरफ्तार कर लिये गये तो लोगोंने चक्रधरको उस छोटी आयुमें ही सहायक मन्त्री बना दिया। उन दिनों राष्ट्रीय आन्दोलनमें विद्यालयके छात्र भी भाग लेते थे। एक दिन कुछ छात्रोंने गया जिला-स्कूलपर जो अँगरेजी झण्डा यूनियन जैक फहर रहा था, उसको उतार दिया और उसके स्थानपर काँग्रेसी तिरंगा झण्डा फहरा दिया। झण्डा फहराने वालोंमें चक्रधर नहीं था, परंतु मास्टर श्रीखालिक साहबको बदला लेनेका मौका मिल गया। उन्होंने झूठी शिकायत कर दी कि यह झण्डा चक्रधर मिश्रने फहराया है, जिसे सरकारी वजीफा भी मिलता है। अँगरेज कलक्टरको बड़ा रोष हुआ कि सरकारी वजीफा पानेवाला विद्यार्थी सरकारके विरुद्ध कार्य कर रहा है। चक्रधरका नाम सरकारकी ब्लैक लिस्ट (अँगरेज-विरोधी व्यक्तियोंकी तालिका)में चढ़ गया।

शिकायत कर चुकनेके बाद मास्टर साहबने कहा– अच्छा बच्चा! अब तुम्हें मेरा विरोध करनेका मजा मिलेगा। देखें, अब तुम आगे कैसे पढ़ते हो? मैं तुम्हारा वजीफा बन्द करवा दूँगा और तुम्हें स्कूलसे निकलवा दूँगा।

चक्रधरने कहा—मास्टर साहब! आप मेरी पढ़ाई क्या छुड़वायेंगे, मैं स्वयं ही पढ़ाई छोड़नेवाला हूँ। मुझे तो देशका स्वदेशी आन्दोलन पुकार रहा है।

चक्रधर स्वदेशी आन्दोलनमें अति सक्रिय रूपमें भाग लेने लगा। चक्रधरने देशकी आजादी के लिये क्या-क्या नहीं किया? उसकी देश-भक्ति पूर्ण गतिविधियोंको देखकर अँगरेजी सरकार उसे गिरफ्तार करना चाहती थी, परन्तु वह पुलिसके हाथ लग नहीं पाता था। चक्रधर काँग्रेसका एक सक्रिय कार्यकर्ता था। पुलिस उसे पकड़नेके लिये बैचेन थी, किन्तु चक्रधर चकमा देकर निकल भागता था।

गया शहरकी बात है। चक्रधर गयामें फखरपुरके राजपरिवारके श्रीलल्लनजीके साथ रह रहा था। पुलिसको इसकी सूचना मिल गयी।

सूचना मिलते ही पुलिस अचानक पहुँच गयी और उसने श्रीलल्लनजीके घरपर घेरा डाल दिया। चक्रधर घेरेमें फँस चुका था। यह बड़ी कठिनाईका क्षण था, परन्तु उसने अपना धैर्य नहीं खोया। सच्ची सेवा-भावनाको भगवानकी ओरसे सहायता मिलती ही है। किसी अचिन्त्य विधानके अनुसार भाग निकलनेके लिये एक अनुकूलता सामने आ गयी। श्रीलल्लनजीकी सुपुत्री स्कूलमें पढ़ा करती थी। उसे स्कूल ले जानेके लिये बन्द दरवाजेवाली एक फिटिन गाड़ी आ गयी। चक्रधरने अवसरका लाभ उठाया। उसने लड़कीका वेष बनाया और अपने कन्धेपर किताबोंका थैला लटका करके वह घरसे बाहर निकला। चक्रधर इस प्रकार पुलिसके घेरेसे बाहर निकल करके अपने गाँव फखरपुर चला आया। पुलिसको श्रीलल्लनजीके घरसे निराश लौटना पड़ा।

जब चक्रधर अपने गाँव फखरपुर था, तब पुलिसके अफसरोंने उसे पकड़नेके लिये वारण्ट जारी कर दिया और वह वारण्ट अरवल थानेपर भेज दिया। अरवल थानेके दारोगाजी गिरफ्तार करनेके लिये फखरपुर आये। फखरपुर गाँवमें आकर दारोगाजी चक्रधरकी खोज करने लगे। उस समय गाँवके कई लड़के घरके सामने खेल रहे थे। उन लड़कोंने ज्यों ही पुलिसकी लाल पगड़ी देखी, वे सब खेलना-हँसना भूल गये और चट इधर-उधर तितर-बितर हो गये। अन्य लड़के तो भाग गये, परन्तु चक्रधर अपने घरके बाहर निर्भीक बैठा रहा और हारमोनियम बजाकर मस्तीके साथ देश-भक्तिके गीत गाता रहा। दारोगाजी उसके पास गये और उससे सवाल किया— चक्रधर मिश्रका घर यही है क्या?

चक्रधरने बतलाया— जी, हाँ।

उसके उत्तरमें लेश मात्र भी न भय था और न हिचक थी। दारोगाजीने फिर पूछा— वह इस समय यहाँ है क्या?

सहज स्वरके साथ चक्रधरने उत्तर दिया— जी! अभी वे यहींपर थे। हो सकता है वे घरके भीतर गये हों। उन्हें बुला लाऊँ क्या?

दारोगाजीने कहा— हाँ, जरा बुला लाओ।

चक्रधर हारमोनियमको वहीं छोड़कर घरके भीतर गया। उसने धीरेसे अपने कपड़े बदले और माथेपर गमछा बाँध लिया, जिससे निपट गँवार

देहाती लगने लगा। फिर घरके पीछेके दरवाजेसे निकलकर उसने सीधे गयाका रास्ता पकड़ लिया। थोड़ी देरतक दारोगाजी घरके भीतर गये हुए लड़केके लौटनेकी प्रतीक्षा करते रहे, परन्तु वह लड़का लौटता तब, जब वह वहाँ होता। वह तो दारोगाजीको चकमा देकर फरार हो चुका था और अपना वेष बदलते हुए गया शहरकी ओर चला जा रहा था। जब वे दारोगाजी प्रतीक्षा करते हुए थक गये तो उन्होंने गाँवके कुछ लोगोंकी सहायतासे घरकी तलाशी ली, किन्तु पूर्णतः निराश होना पड़ा।

* * * * *

प्रथम जेल-यात्रा

चक्रधर मिश्र पुलिसकी आँखोंमें धूल झोंककर गया पहुँच गया। वहाँ पहुँचनेके दूसरे या तीसरे दिन आजाद पार्कमें सार्वजनिक सभा थी। सभामें चक्रधरका भाषण होनेवाला था और उसके भाषणकी सूचना दूर-दूरतक प्रचारित भी कर दी गयी थी। पुलिस चाहती थी कि भाषण देनेके पहले ही चक्रधरको गिरफ्तार कर लिया जाय। पुलिसने आजाद पार्कको चारों ओरसे घेर लिया, घेर लिया इसलिये कि ज्यों ही चक्रधर सभामें भाषण देनेके लिये जायेगा, पार्कमें घुसनेसे पहले ही उसे हिरासतमें ले लिया जायेगा। पार्कमें चक्रधरका जोशीला भाषण सुननेके लिये भीड़ इकट्ठी हो गयी। सभाका कार्यक्रम शुरू हो गया, परन्तु चक्रधर कहीं भी दिखलायी नहीं दिया। जनताके दिलमें उत्सुकता थी कि चक्रधर कब बोलनेवाला है और पुलिसकी आँखोंमें तलाश थी कि वह चक्रधर मिश्र किधरसे घुसनेवाला है। चक्रधरको गिरफ्तार करनेके लिये स्वयं कलक्टर साहब उपस्थित थे। कुछ लोगोंके भाषणके उपरान्त सभा-संयोजकने सूचना देते हुए बतलाया कि अब श्रीचक्रधर मिश्रका भाषण होगा। जनताके उत्सुक दोनों कान और पुलिसकी बेचैन दोनों आँखें उसी चक्रधर मिश्रको खोज रही थीं। इस सूचनाको देनेके कुछ क्षण बाद चक्रधर टेबुलका पर्दा हटाकर बाहर निकला। मंचके ऊपर टेबुल थी और उस टेबुलको एक बहुत बड़ी चादरसे ढक दिया गया था। वह बड़ी चादर टेबुल-क्लाथका काम कर रही थी। उस बहुत बड़ी चादरसे ढकी हुई टेबुलके नीचे चक्रधर छिपकर बैठा हुआ था। जनता मन-ही-मन कह रही थी कि इस चतुर युवकने पुलिसको

अच्छा चकमा दिया और पुलिस मन-ही-मन कह रही थी कि इस चालबाज युवकने अच्छा धोखा दिया। जो हो चक्रधर मिश्रका बड़ा प्रभावशाली भाषण हुआ। भाषणके पूर्ण होते ही कलक्टर साहबने स्वयं आगे बढ़कर चक्रधर मिश्रको बन्दी बनाया। फिर तो उसे जेल जाना ही था। चक्रधर भी जानता था कि आज मुझे गिरफ्तार होना ही है। सार्वजनिक सभामें चक्रधरने भाषण अँगरेजी सरकारके विरुद्ध दिया था, इस राजद्रोहके अपराधमें चक्रधरको छः मासकी सजा सुना दी गयी। यह प्रसंग सन् १९२८ या १९२९ ई. का है।

चक्रधर जब जेलमें था तो घरके लोग उनसे मिलने जेलमें गये। घरवालोंको बड़ा दुःख हो रहा था कि जेलमें उसे बहुत कष्ट भोगना पड़ेगा। जेली पोशाकमें खड़े हुए चक्रधरसे बड़े भाईने कहा कि तुम क्षमा माँग लो, पर इसके लिये चक्रधर तैयार नहीं हुआ। फिर छः मासकी सजा भोगनेके लिये चक्रधरको गया जेलमें रहना पड़ा।

जेलमें चक्रधरको यातना कम नहीं भोगनी पड़ी। गया जेलका सुप्रिंटेंडेंट प्रौढ़ावस्थावाला विशालकाय एक आयरिश अँगरेज था। वह लँगड़ा करके चला करता था, इसीलिये लोग उन्हें लँगड़ा साहब कहते थे। जेलका निरीक्षण करते समय जब वह कैदियोंके पास जाया करता था तो वह उनसे कहा करता था– बोलो, साहब सलाम, बोलो।

जो कैदी सलाम कर लेते थे, उन्हें तो वह लँगड़ा साहब कुछ नहीं कहता था, पर जो नहीं करते थे अथवा आनाकानी करते थे, उनके लिये तो वह खूँखार बन जाया करता था। चक्रधर काँग्रेस कमेटीमें मन्त्री था, अतः चक्रधरपर बड़ी कड़ी नजर रखी जाती थी। जब कैदियोंको देखनेके लिये लँगड़ा साहब आया तो उसने चक्रधरसे कहा– बोलो, साहब सलाम, बोलो।

चक्रधर सुनकर भी चुपचाप खड़ा रहा। उसने दुबारा कहा, इसके बाद भी चक्रधर स्थिर खड़ा रहा। तिबारा कहे जानेपर भी चक्रधरने वैसा नहीं किया तो उसका क्रोध भड़क उठा। उसने चक्रधरकी नाकपर जोरसे घूँसा मारा। नाकके साथ-साथ चोट आँखपर भी आयी। ऐसा लगा कि आँख सदाके लिये चली जायेगी। उसी समय नाकसे खूनकी धारा बह चली और चक्रधर मूर्च्छित हो करके जमीनपर गिर पड़ा।

चक्रधरको जेलके अस्पतालमें भर्ती करा दिया गया। लगभग १५, २० दिनतक अस्पतालमें रहना पड़ा। जबतक अस्पतालमें रहा, बार-बार चक्रधरको यही दीख रहा था कि अस्पतालसे निकलनेके बाद फिर वही मार भोगनी पड़ेगी। इन विपत्तियोंके क्षणोंमें चक्रधरको अपने गाँवके एक कुम्हारकी याद आयी। उस कुम्हारका घर चक्रधरके घरके पास था। बहुत भोरमें ही उठ करके वह मिट्टीके बर्तन बनाना आरम्भ कर देता था। उसका स्वभाव था काम करते जाना और भक्ति-भावके पद गाते जाना। एक पद वह प्रायः गाया करता था, उसकी पहली पंक्ति थी, 'तेरे मालिक हैं दीनानाथ, सोच मन काँहे को करे'? उसके गानेसे चक्रधरकी नींद टूट जाया करती थी। चक्रधरने चिढ़कर उससे कहा— क्या बेकारकी बात सबेरे-सबेरे गाने लगते हो?

उस कुम्हारने स्थानीय देहाती भाषामें कहा— बच्चा! जब जीवनमें संकट आयेगा और जब कोई भी साथ या सहारा देनेवाला नहीं होगा, तब तुम भगवानको याद करना। उस समय इस पंक्तिका अर्थ समझमें आयेगा। सच्ची बात यही है कि दीनोंके नाथ भगवान हैं और वे ही संकटोंसे उबारते हैं।

उस कुम्हारकी बात अब रह-रह करके चक्रधरको याद आ रही थी। चक्रधर मन-ही-मन भगवानसे प्रार्थना कर रहा था कि इस संकटसे बचाइये। चक्रधर अस्पतालसे जेलमें आ गया। वह लँगड़ा साहब जेलका निरीक्षण करने कई बार आया। उसका व्यवहार अन्य कैदियोंके साथ तो वैसा ही क्रूर था, पर चक्रधरके साथ उसने क्रूरता नहीं दिखलायी। ऐसा कैसे हो गया, कारण कुछ पता नहीं, पर चक्रधर यही बात सोचा करता था कि भगवानने मेरी प्रार्थना सुन ली और मेरा बचाव हो गया।

जेलके अन्दर कोल्हूमें तेल पेरना, चक्कीमें आटा पीसना, खेतमें पानी सींचना आदि-आदि कठिन परिश्रमके काम करने पड़ते थे। छः मासकी सजा भोगनेके बाद चक्रधर जेलसे बाहर आया, पर अब उनके मनका झुकाव क्रान्तिकारी गतिविधियोंकी ओर हो गया था। जेलसे बाहर आनेके बाद घरवालोंने कहा भी कि इन राजनैतिक कार्योंमें भाग मत लो, पर चक्रधरने उसपर ध्यान नहीं दिया।

राजनैतिक कार्यकर्ताके रूपमें चक्रधर इधर-उधर भागता और छिपता रहता। कई बार रातके दस-ग्यारह बजे घर आता तथा अपनी पैनालवाली बहिनको और मातृस्थानीया भाभीजी (पं.श्रीदेवदत्तजीकी धर्मपत्नी)को जगाकर रोटी बनवाता और खाता। उनकी पैनालवाली बहिन भाभीजीको सखी कहा करती थी। जब वह आकर अपनी बहिनको जगाता था तो वे बहिन आकर भाभीजीसे कहती थी— चल सखी, टूना (चक्रधर) आयल हथू।

कभी वह खुद आता और कहता— अहो नायको! चल, हम अइली।

तब भाभीजी और उनकी बहिन दोनों मिलकर रोटी बनातीं और वह प्रेमपूर्वक खाता। फिर सुबह होनेसे पहले ही पता नहीं वह कहाँ चला जाता।

एक बार उसने भाभीजीसे कहा था— जेलमें उन्हें अरहर दलनेके लिये मिलता था, जिसे वह फाँकते भी था।

* * * * *

विप्लववादी सक्रियता

बिहारके राजनैतिक आन्दोलनोंमें भाग लेते समय चक्रधरको एक बातका बड़ा कटु अनुभव हुआ। चक्रधरको कई बार ऐसा देखनेको मिला कि कुछ-एक व्यक्तियोंको छोड़कर प्रायः लोगोंमें सेवाकी भावना न्यून और आत्म-ख्यापनकी भावना अधिक है। इससे चक्रधरका मन राजनैतिक आन्दोलनोंसे हटकर क्रान्तिकारी गतिविधियोंकी ओर झुकने लगा, जहाँ पद-पदपर मूक आत्मबलिदान था। चक्रधरके मनमें क्रान्तिकारियोंकी जीवन-गाथा एवं आत्मोत्सर्ग-प्रसंगोंको पढ़नेका चाव बढ़ चला। उसके प्रभावमें क्रान्तिकारियों द्वारा अपनाये गये रास्तेपर चलनेकी प्रवृत्ति जाग पड़ी। भारतमें अँगरेजी राज्यको उखाड़ फेंकनेके लिये कृत-संकल्प क्रान्तिकारियोंका महात्मा गाँधीजीके सत्य-अहिंसा-शान्तिमय प्रयासमें विश्वास नहीं था। सभाओंमें प्रस्ताव पारित करनेसे तथा अँगरेजी शासकोंके सामने हाथ पसारनेसे काम बननेवाला नहीं है, अपितु आवश्यकता इस बातकी है कि लाठीका जबाव लाठीसे दिया जाये। चक्रधरका सम्पर्क विप्लववादियोंसे बहुत अधिक हो गया। लोगोंको इस बातकी जानकारी नहीं थी कि चक्रधरका सम्बन्ध विप्लववादी गतिविधियोंसे भी है। विप्लववादी कार्योंमें सफलता पानेके लिये इस सम्बन्धको सुगुप्त रखना आवश्यक भी था। यह सुगुप्तता ही तो विप्लववादी

गतिविधियोंकी रक्षा-कवच थी। सर्तकता इतनी अधिक रखी जाती थी कि विप्लववादी योजनाओंकी पूर्ण जानकारी तो केवल सर्वोच्च स्तरके कतिपय कार्यकर्ताओंको रहा करती थी, शेष सदस्योंको तो केवल उतना ही ज्ञात रहता था, जितना कार्य उनके द्वारा होना था।

चक्रधर और उनके मित्र मदनमोहन सिंह क्रान्तिकारियोंके सम्पर्कमें थे। वे उनसे बम आदि बनानेकी शिक्षा लेते थे। कलकत्तेका एक बंगाली उन लोगोंको हथियार दिया करता था। कुछ दिनों बाद उस बंगालीने सामान देना बन्द कर दिया। उसकी इस वंचनासे चक्रधर मिश्रकी भावनाको बड़ा धक्का लगा।*

चक्रधरकी क्रान्तिकारी गतिविधियाँ केवल गया नगरतक ही सीमित नहीं थी, अपितु इनका कार्यक्षेत्र सम्पूर्ण बिहार प्रान्त था। एक बार क्रान्तिदलके सदस्योंने ऐसी योजना बनायी कि बिहार और उड़िसा प्रान्तोंमें जितने भी पुलिसके थाने हैं, उन सब थानोंपर एक निश्चित दिन और एक निश्चित समयपर बम गिराया जाये और बम-विस्फोटके द्वारा उन सभी थानोंको एकदम उड़ा दिया जाये। यह योजना आगे नहीं बढ़ पायी, पर पुलिसका दल सदा ही इन क्रान्तिकारियोंके पीछे पड़ा रहता था। वेष बदलनेमें चक्रधर बड़े कुशल थे। कभी लाठी पकड़कर कूबड़ निकले हुए एक वृद्धकी भाँति चलते और कभी तुर्की टोपी लगाकर चुस्त पायजामा पहने हुए एक मुसलमानकी भाँति सड़कपर निकल जाते। परिवर्तित वेष होनेके कारण पुलिस चकमा खा जाती। वेष-परिवर्तन तथा अन्यान्य प्रकारकी

---

*यहींपर एक बात और उल्लेखनीय है। सन् १९७५ ई.में वृन्दावनमें पूज्य श्रीकरुणासिन्धुजी महाराजने महाप्रयाण किया। आप होमियोपैथिक चिकित्साके बड़े जानकार थे तथा रुग्ण लोगोंको औषधिका नाम लिखकर दे दिया करते थे। किंतु वे अपने नियमोंके प्रति इतने अधिक निष्ठावान थे कि रुग्णावस्थामें औषधिके नामपर उन्होंने स्वयं कभी गर्म पानी भी स्वीकार नहीं किया। यह रुग्णता विघातक ही सिद्ध हुई।

श्रीकरुणासिन्धुजी महाराजके महाप्रयाणके शोक समाचारको सुनकर बाबा बड़े व्यथित हुए और पुरातन जीवनके प्रसंगोंको स्मरण करके आर्द्र मनसे बाबा कहने लगे—क्रान्तिदलके सदस्यके नाते मेरी उनसे बड़ी आत्मीयता थी। उनके पूर्वाश्रमका नाम था श्रीकेशवप्रसादजी। वे बड़े ही साहसी क्रान्तिकारी थे। हमारे दलमें उन जैसा सच्चा, साहसी और ईमानदार व्यक्ति कोई दूसरा नहीं था। उनकी सूझ-बूझकी सदा ही सराहना होती थी।

सर्तकताओंके कारण पुलिस पकड़ नहीं पाती थी।

एक बार पुलिसको अपने प्रयासमें कुछ सफलता मिल गयी। पुलिसने बिहार प्रान्तके क्रान्तिकारी दलके कई सदस्य गिरफ्तार कर लिये। उन गिरफ्तार सदस्योंको यह भी पता चल गया कि चक्रधरका कोई एक पत्र पुलिसके हाथ लग गया है और उस पत्रके आधारपर पुलिस चक्रधरको गिरफ्तार करना चाह रही है। उन सदस्योंने इस बातकी सूचना देनेके लिये एक व्यक्तिको चक्रधरके पास गाँवपर भेजा। वह व्यक्ति चक्रधरके घरपर आया। चक्रधरको यह पता तो था नहीं कि यह मेरे क्रान्तिकारी दलका है अथवा मेरे दलके सदस्योंका सही संदेशवाहक है। इस बातकी सही जानकारी प्राप्त करनेके लिये कुछ पूर्व-निर्धारित संकेत रहा करते थे। उदाहरणके लिये, उस व्यक्तिने आकर कहा—

उमा कहउँ मैं अनुभव अपना। सत हरि भजनु जगत सब सपना।।

उसके कहनेपर चक्रधरने कहा—

रामहि सुमिरिअ गाइअ रामहि। संतत सुनिअ राम गुन ग्रामहि।।

इस प्रकार दो-तीन चौपाई वह व्यक्ति कहता और उसके उत्तरमें दो-तीन चौपाई चक्रधर कहते। किस चौपाईके बाद कौन-सी चौपाई कहनी है, यह क्रम पहलेसे ही निर्धारित रहता। यदि सारी बात पूर्व-निर्धारित क्रमके अनुसार मिल जाती तो यह मान लिया जाता कि यह व्यक्ति अपना ही है।

उस व्यक्तिने आकर संदेश दिया— यदि तुम अभीतक गिरफ्तार नहीं हुए हो तो तुरंत फरार हो जाओ। तुम्हारा एक पत्र पकड़ा गया है। उस पत्रके आधारपर पुलिस तुमको गिरफ्तार करनेके लिये अत्यधिक सक्रिय है। हमलोग तो गिरफ्तार हो ही चुके हैं। जेलमें जो दुर्दशा होगी, वह तो भोगनी ही है। अब तुम क्यों जान-बूझकर स्वयंको कालके मुँहमें झोंको? अतः इस संदेशके पाते ही अपने बचावका उपाय कर लेना।

इस संदेशके मिलते ही चक्रधरको परिस्थितिकी गम्भीरताका अनुमान हो गया। चक्रधरने उस व्यक्तिसे पूछा— तुम्हारी मैं क्या सेवा करूँ?

वह व्यक्ति अड़तालीस मील पैदल चलकर लोगोंकी दृष्टिसे स्वयंको बचाते हुए चक्रधरके पास आया था। उसने कहा— हो सके तो मुझे दो रुपया दे दो, जिससे मैं वापस जा सकूँ।

चक्रधर तुरंत घरमें गये और अपनी माँसे कहा– माँ! तू मुझे तीन-चार रुपये दे दे। किसी आवश्यक कार्यसे मुझे गया अभी जाना है।

उन दिनोंके चार रुपये आजके कई सौ रुपयोंके बराबर समझना चाहिये।

माँने कहा– भोजन कर ले, तब गया जाना। भोजन बन चुका है।

चक्रधरने कहा– भोजन करनेके लिये समय नहीं है। तू देर मत कर। रुपया दे दे।

माँने रुपया दे दिया। चक्रधरने दो रुपये उस व्यक्तिको दिये और शेष अपने पास रख लिये। रुपये मिलनेके बाद वह व्यक्ति वापस चला गया। चक्रधर भी वेष बदलनेका सामान अपने थैलेमें लेकर घरसे निकल पड़े। जो रास्ता गाँवसे सीधे गया नगरको जाता था, वह रास्ता चक्रधरने छोड़ दिया। खेतोंके टेढ़े-मेढ़े रास्तेसे होकर अरहरके खेतोंको पार करते हुए चक्रधर चलने लगे। एक-दो मील चल लेनेपर जहाँ सुनसान स्थान मिलता, वहीं चक्रधर अपना वेष बदल लेते। अरहरके बड़े-बड़े पौधोंके बीच कोई देख नहीं सकता था, अतः चक्रधर प्रायः ऐसे ही स्थानपर वेष बदलते। वेष बदलते हुए, रास्ता बदलते हुए, कभी पैदल और कभी सवारीका उपयोग करते हुए चक्रधर रातके समय गया पहुँचे।

चक्रधर रातको ही सीधे राजासाहबके घरपर गये। श्रीराजासाहबका नाम था श्रीअविमुक्तेश्वर बहादुर सिन्हा। चक्रधरके पिताजी इन्हींके राजकुल-पुरोहित थे। राजासाहब चक्रधरको बहुत प्यार करते थे, बहुत सम्मान देते थे। इस असमयमें चक्रधरको देखकर वे थोड़ा चौंके तथा कहने लगे– इस समय यहाँ कैसे?

चक्रधरने कहा– मैं इसी समय गाँवसे यहाँ गया पहुँचा हूँ।

राजासाहबने कहा– मैंने सुना है कि तुम्हारे नाम वारंट है और पुलिस तुम्हें गिरफ्तार करनेके लिये दौड़-धूप कर रही है। ऐसी परिस्थितिमें तुम गयामें घूम रहे हो।

चक्रधरने कहा– वारंट है, इसीलिये मैं रातभरके लिये आपके यहाँ आया हूँ। यदि आपके मनमें तनिक भी भय हो तो मैं अभी चला जा सकता हूँ।

राजासाहबने कहा— भयका प्रश्न नहीं। यहाँ संदेहरहित मनसे रहो, पर तुम्हारे लिये मनमें चिंता तो उत्पन्न होती ही है।

चक्रधरने आश्वस्त करते हुए कहा— मैं तो रात बीतते-बीतते सूर्योदय होनेके पहले ही इस स्थानसे चला जाऊँगा।

राजासाहबने तुरंत भोजन बनवाया। चक्रधर थके-माँदे तो थे ही। भोजन करके गहरी नींदमें सो गये। प्रभात होते ही शौचादिसे निवृत्त होनेके बहानेसे चक्रधर फल्गु नदीके पार निकल गये तथा पुलिसकी गतिविधियोंकी जानकारी प्राप्त करने लगे। चक्रधर चाहते थे कि मुझे एक चिकित्सा-प्रमाण-पत्र (MEDICAL CERTIFICATE) मिल जाये, जिसके आधारपर राजासाहबके यहाँ रहा जा सके। फिर पुलिसद्वारा होनेवाली खोजमें पकड़ लिये जानेपर भी राजासाहबपर कोई आँच नहीं आयेगी। राजासाहबके एक परिचित डाक्टर साहबके पास चक्रधर गये। उन्हें एक प्रकारसे पारिवारिक चिकित्सक ही कहना चाहिये। कुशल चिकित्सकके रूपमें उनकी बड़ी ख्याति थी। उन डाक्टर साहबसे चक्रधरने कहा— आप मुझे एक चिकित्सा-प्रमाण-पत्र दे दें।

डाक्टर साहबने कहा— जब तुम बीमार हो ही नहीं, तब तुमको चिकित्सा-प्रमाण-पत्र कैसे दे दूँ?

चक्रधरने बताया— मुझे चिकित्सा-प्रमाण-पत्रकी बड़ी आवश्यकता है। आप अपने रजिस्टरमें मेरा नाम चढ़ाकर तथा दवा देकर मुझे प्रमाण-पत्र दे दीजिये।

सारी परिस्थिति समझनेके बाद उन्होंने चक्रधरको चिकित्सा-प्रमाण-पत्र दे दिया। उन्होंने प्रमाण-पत्रमें लिखा— I have suspicion that he has stone in his kidney (अर्थात् मुझे संदेह है कि इसके मूत्राशयमें पथरी है).

चिकित्सा-प्रमाण-पत्र पानेके बाद चक्रधर भय-रहित होकर राजासाहबके यहाँ रहने लगे।

इन्हीं दिनों उत्तर प्रदेशके बाँदा नगरमें क्रान्तिकारियोंने तीन पुलिस- इंस्पेक्टरोंकी हत्या कर दी थी। इस हत्याके बाद क्रान्तिकारियोंकी और उनके समर्थकोंकी एवं सहयोगियोंकी धर-पकड़ पुलिसने आरम्भ कर दी थी। संदेहके नामपर ही अनेक लोग गिरफ्तार कर लिये गये थे।

चक्रधरद्वारा लिखा गया जो एक पत्र पुलिसके हाथमें पड़ गया था, उस पत्रमें चक्रधरने अपने मित्रको लिखा था कि ''मैं बन्दा परसों आऊँगा''। पत्रमें जो 'बन्दा' शब्द लिखा गया था, उस शब्दकी 'बाँदा'से बेतुकी तुक बैठाकर पुलिस चक्रधरके पीछे पड़ गयी थी। Conspiracy against the Crown (अर्थात् अँगरेजी शासनके विरुद्ध षडयन्त्र) के अपराधमें पुलिस चक्रधरको फँसाना चाहती थी। उधर पुलिसवाले पत्रके आधारपर चक्रधरको अपराधी सिद्ध करनेके लिये प्रयत्नशील थे और इधर चक्रधरके मनकी भावनाएँ कुछ और ही थीं। जब चक्रधरको पता चला कि मेरा जो एक पत्र पकड़ा गया है, उस पत्रमेंके एक शब्द 'बन्दा' की 'बाँदा'से तुक मिलाकर मुझको गिरफ्तार करनेकी और न्यायालयसे दण्ड दिलवानेकी योजना पुलिस बना रही है, तब चक्रधरने भगवानसे अपनी पूरी ईमानदारीके साथ प्रार्थना की– आप सर्वज्ञ हैं, आप सब जानते हैं। सत्य और वास्तविकता आपसे छिपी नहीं है। यदि बाँदामें मारे गये पुलिस-इंस्पेक्टरोंकी हत्यामें अथवा हत्या-योजनामें किसी भी स्तरपर किसी भी प्रकारसे मेरा तनिक भी हाथ हो तो मुझे अवश्य जेल-यातना मिले, पर यदि मेरा तनिक भी हाथ न हो तो पुलिसके कोटि-कोटि प्रयत्नोंके बाद भी मैं साफ-साफ बच जाऊँ।

पुलिसका डी.आई.जी. (Deputy Inspector General) एक अँगरेज था। उस प्रधान अँगरेज अधिकारीका एक और सहयोगी उप-अधिकारी था। इसके अतिरिक्त, गुप्तचर विभागके प्रधानका नाम था श्रीप्रदीपबाबू। ये तीनों वरिष्ठ अधिकारी पुलिस कार्यालयमें बैठकर चक्रधरके उस पत्रपर विचार-विनिमय कर रहे थे। 'बन्दा' शब्दके आधारपर चक्रधरको षडयन्त्रकारी घोषित करनेकी बात चल रही थी। सहयोगी-उपाधिकारीने चक्रधरवाला पत्र पढ़ा। पत्रके अन्तमें चक्रधरका नाम 'चक्रधर मिश्र' पढ़कर उनका माथा ठनका। वे उपाधिकारी राजासाहबके यहाँ बहुत आया-जाया करते थे। उनका राजासाहबसे बड़ा स्नेह था और उन्होंने राजासाहबके यहाँ चक्रधरको बहुत बार देखा था। अब उस पत्रके अन्तमें चक्रधरका नाम पढ़कर वे उपाधिकारी सोचने लगे कि यदि चक्रधर मिश्र पकड़ा जाता है तो इसका अर्थ है जेलकी क्रूरताका शिकार बनकर मृत्युके गालमें चले जाना। बाहरसे कुछ भी अभिव्यक्त न होने देते हुए वे उपाधिकारी चक्रधरके बचावका उपाय सोचने लगे, पर कोई उपाय सूझ

नहीं रहा था। यह बात स्पष्ट थी कि इस पत्रका लिखनेवाला चक्रधर मिश्र है और पुलिसने 'बन्दा' और 'बाँदा'की तुक ऐसी मिला दी थी कि उससे षडयन्त्रका संदेह होना शत-प्रति-शत सही बन रहा था। उन उपाधिकारी महोदयने उस पत्रको एक बार दो बार तीन बार ध्यानपूर्वक आँखें गड़ाते हुए पढ़ा तथा साथ-ही-साथ वे बचावका उपाय भी सोचते जा रहे थे। पत्र पढ़ चुकनेके बाद उन उपाधिकारी महोदयने अपने प्रधानसे कहा– 'बन्दा' शब्दके आधारपर चक्रधर मिश्रके षडयन्त्रकारी होनेका संदेह करना सही है, पर क्या इस पत्रका लिखनेवाला वस्तुतः चक्रधर मिश्र ही है?

प्रधान अँगेरज अधिकारीने पूछा– आपका क्या मतलब है?

उपाधिकारी महोदयने कहा– यह लिखावट (Hand-Writing) सम्भवतः चक्रधर मिश्रके हाथकी नहीं है। यदि यह लिखावट चक्रधर मिश्रके हाथकी नहीं हुई और हमलोगोंने उसे गिरफ्तार कर लिया तो उसके विरुद्ध कार्यवाही करनेमें बड़ी परेशानी आयेगी। फिर हमलोगोंके पास कोई प्रमाण नहीं रहेगा, जिसके आधारपर उसे दण्डित करके जेल भेजा जा सके।

गुप्तचर विभागके प्रधान श्रीप्रदीपबाबूने तुरंत प्रतिवाद किया और पूर्ण दृढ़ स्वरमें कहा– यह पत्र चक्रधर मिश्रके हाथका है और यह लिखावट उसीकी है।

उपाधिकारी महोदयने पुनः श्रीप्रदीपबाबूकी बात काट दी। अपनी बातका गिर जाना प्रदीपबाबूको अच्छा नहीं लगा। वे अपने अँगरेज अफसरोंकी खुशी और खुशामदको ही सब कुछ मानते थे। उनके लिये देश और धर्म, गाय और गीता, हिन्दुत्व और देवत्व महत्त्वपूर्ण नहीं थे। प्रदीपबाबूकी मान्यता थी कि चाहे सिरपर चोटी और शरीरपर जनेऊ रहे या न रहे, चाहे भारतका गौरव और भारतीयोंका जीवन बचे या न बचे, पर मेरी सरकारी कुर्सी और मेरे अँगरेज अफसर बने रहें, जिससे बनी रहे मेरी रोटीकी चिकनाई और कपड़ोंकी सफेदी। नमकहलालीके नामपर अँगरेज शासकोंके प्रति वफादारी दिखलानेके लिये और उनकी वाहवाही प्राप्त करनेके लिये श्रीप्रदीपबाबू बड़े विख्यात थे। श्रीप्रदीपबाबूने बड़ी चेष्टा की कि मेरे गुप्तचर विभागद्वारा लगाया गया आरोप पूर्णतः स्थापित

हो जाये, पर उस अँगरेज अधिकारीने श्रीप्रदीपबाबूकी बात नहीं मानी। उस पुलिस कार्यालयमें उन तीन वरिष्ठ अधिकारियोंके मध्य जो विचार-विनिमय हो रहा था, उसके अन्तमें यही निश्चित हुआ कि चक्रधरका पत्र लिखावट-विशेषज्ञ (Hand-writing expert) के पास भेजा जाये और उसकी रिपोर्टके आधारपर ही आगेकी कार्यवाही की जायेगी।

अब पुलिस विभागको आवश्यकता थी चक्रधरके हाथसे लिखे गये कुछ अंशोंकी, जिसकी लिखावटसे पत्रके लिखावटकी तुलना लिखावट-विशेषज्ञ कर सके और अपना निर्णय दे सके। पुलिसने दौड़-धूप करके पता लगा लिया कि चक्रधर रुग्णावस्थामें आजकल राजासाहबके मकानपर हैं और अपनी चिकित्सा करवा रहे हैं। कई सिपाहियोंके साथ पुलिस-अधिकारी राजासाहबके यहाँ आये। अपने घरपर राजासाहबने उनका स्वागत किया। पुलिस अधिकारीने कहा– ऐसी जानकारी मिली है कि चक्रधर मिश्र आपके यहाँ हैं। आप विश्वास करें कि हमलोग उसे गिरफ्तार करनेके लिये नहीं आये हैं। केवल उनसे कुछ लिखवाना है। हम बोलते जायेंगे कि क्या लिखना है। जो हम बोलें, उसे वह लिख दे।

राजासाहबने यह बात चक्रधरके पास कहलवा दी। चक्रधर घरके भीतर थे। बात सुनकर चक्रधर अपने शरीरपर कम्बल लपेटे हुए, रोगीका-सा चेहरा बनाये हुए और रोगीकी तरह चलते हुए पुलिस-अधिकारीके सामने आये। चक्रधरको बैठनेके लिये कुर्सी दी गयी। पुलिस-अधिकारीने कहा– मुझे आपके हाथकी लिखावट (Hand-writing) चाहिये। मैं जो-जो कहूँ, वह-वह आप लिखते जायें।

चक्रधरको सारी बात ज्ञात थी ही। चक्रधर लिखकर दे देनेके लिये तैयार हो गये। पुलिस-अधिकारीने जो-जो कहा, चक्रधर वह सब लिखते गये। कई बातें कई तरहसे लिखवायी गयीं। चक्रधरका असली पत्र तो पुलिस-कार्यालयमें था, पर उस पत्रकी नकल इस पुलिस-अधिकारीके पास थी। वह नकल पुलिस-अधिकारी बोलता चला गया और चक्रधर लिखते गये। कभी तेज गतिसे, कभी धीमी गतिसे, कभी और भी धीमी गतिसे, कभी मध्यम गतिसे, कभी मिश्रित गतिसे, कभी अति मन्द गतिसे, इस प्रकार वही पत्र तथा और भी गद्यांश चक्रधरसे कई बार लिखवाया गया। सम्भवतः ग्यारह-बारह बार लिखवाया गया। चक्रधरने यह सब अपनी

असली स्वाभाविक लिखावटमें लिख दिया। लिखते समय चक्रधर भगवानसे मन-ही-मन ऐसा कह भी रहे थे— हे नाथ! मैं अपनी लिखावटमें कोई बनावट नहीं लाऊँगा। इस समय बनावटका समावेश करना कोई बड़ी बात नहीं है, बनावटका समावेश लिखावटमें सरलतापूर्वक हो सकता है, पर इस समय मैं वैसे ही लिखूँगा, जैसे मैं सहज लिखा करता हूँ, पर आप तो जानते हैं कि बाँदा नगरमें मारे गये पुलिस-इंस्पेक्टरोंकी हत्यामें मेरा तनिक भी हाथ नहीं है। यह बात सर्वथा सत्य है और इसी सत्यके आधारपर मैं आपसे प्रार्थना कर रहा हूँ कि मुझपर जो आरोप मढ़ा जा रहा है, उससे मैं पूर्णतः निर्दोष सिद्ध कर दिया जाऊँ।

चक्रधरने अपनी लिखावटको बिगाड़नेका प्रयास किया नहीं। चक्रधर सत्यको पकड़े रहे और सत्यका आश्रय लिये हुए भगवानकी कृपाकी प्रतीक्षा करते रहे। अपना मनचाहा लिखवा करके पुलिसके लोग चले गये। ये सब लिखे गये अंश और वह असली पत्र पुलिसने लिखावट-विशेषज्ञके पास भेज दिया। श्रीप्रदीपबाबूको पूर्ण विश्वास था कि मेरी बात ऊँची रहेगी। बातके कट जानेका कोई प्रश्न ही नहीं, क्योंकि यह असली पत्र है ही चक्रधर मिश्रके हाथका। इस प्रकार उनका सोचना उचित था, वस्तुतः सर्वथा ही उचित था, पर महान आश्चर्य यह हुआ कि लिखावट-विशेषज्ञने अपनी रिपोर्टमें लिख दिया कि यह असली पत्र चक्रधर मिश्रके हाथका नहीं है।

इस रिपोर्टको पढ़कर श्रीप्रदीपबाबू बड़े झुँझलाये, बड़े झल्लाये और लिखावट-विशेषज्ञकी 'अयोग्यता और अन्धेपन' पर टीका-टिप्पणी करने लगे। श्रीप्रदीपबाबू इतनेसे ही सन्तोष करनेवाले नहीं थे। वह सारी सामग्री फिर एक दूसरे लिखावट-विशेषज्ञके पास भेजी गयी। क्या ही आश्चर्य है कि दूसरे लिखावट-विशेषज्ञने भी यही निर्णय दिया कि असली पत्र चक्रधर मिश्रके हाथका नहीं है। इसके बाद वह सारी सामग्री फिर तीसरे लिखावट-विशेषज्ञके पास भिजवायी गयी। तीसरेने भी वही निर्णय दिया, जो पहले दो दे चुके थे।

चक्रधर साफ-साफ बच गये। षडयन्त्रकारी होनेका आरोप चक्रधरपर स्थापित नहीं किया जा सका, अतः चक्रधर गिरफ्तारीसे बच

गये, परंतु पुलिसकी आँखोंमें चक्रधर सदा चुभते रहे। पुलिस चक्रधरको फँसा नहीं सकी।*

* * * * *

द्वितीय जेल-यात्रा

चक्रधर क्रान्तिकारी दलके सक्रिय कार्यकर्ता थे। इन क्रान्तिकारियोंकी आस्था विप्लवमें थी और यही कारण है कि अपनी विप्लवकारिणी कार्य-योजनाओंको सफल बनानेके लिये तथा विदेशी शासनके राक्षसी शिकंजेसे स्वयंको सुरक्षित रखनेके लिये ये क्रान्तिकारी लोग पद-पदपर बड़े सावधान रहा करते थे। गया नगरमें क्रान्तिकारी दलके जो कतिपय सदस्य थे, उन्होंने नगरमें तीन-चार मकान किरायेपर ले रखे थे। एक मकानमें कार्य करते-करते जब इन लोगोंको कुछ आभास मिल जाता था कि पुलिस इस मकानको घेरनेवाली है, तभी ये लोग इस मकानसे दूसरे मकानमें सामानके सहित चले जाया करते थे। इसके फलस्वरूप पुलिस इनको पकड़ नहीं पाती थी।

एक दिनकी बात है। एक बहुत बड़े मकानमें इन लोगोंने आधी राततक काम किया। यह मकान राजा साहबका था और था बहुत बड़ा। यह नगरमें भुतहा मकानके रूपमें बदनाम था, अर्थात् इस मकानमें भूत-प्रेत रहते हैं। ऐसा कुचर्चित मकान ही इन लोगोंको अपनी क्रान्तिकारी गतिविधियोंके लिये उपयोगी रहा करता था। भुतहा मकानके पास भला लोग क्यों आने लगे? ये क्रान्तिकारी लोग आधी राततक साइक्लोस्टाइल मशीनसे पन्द्रह-बीस हजार पर्चे छाप लिया करते थे। इन पर्चोंमें अँगरेजी शासनके काले कारनामोंका कच्चा चिट्ठा रहा करता था। ये कारनामें चाहे भूतकालके हों अथवा वर्तमानकालके हों,

---

*बाबा कई बार कहा करते थे– यह बताना सर्वथा कठिन है कि वस्तुतः क्या बात हुई? मेरे पत्रकी लिखावट बदल गयी अथवा पुलिसद्वारा लिखवाये गये अंशोंकी लिखावट बदल गयी अथवा उन लिखावट-विशेषज्ञोंकी आँखें बदल गयीं, जो भी हो, इसके सम्बन्धमें कुछ भी नहीं बतलाया जा सकता, परंतु इतना स्वतः सिद्ध है कि सत्यका आश्रय और भगवानकी कृपा, इन दोनोंने सचमुच ही असम्भवको सम्भव कर दिया।

उनको संक्षिप्त और उबलती भाषामें लिखा जाता था। प्रातःकाल होते-होते ये पर्चे नगरमें जगह-जगह चिपका दिये जाते थे तथा बाँट दिये जाते थे। कुछ पर्चे अन्य नगरोंके लिये भी भेज दिये जाते थे। पुलिसकी आँख बचा करके ही यह सारा कार्य होता था। पुलिस इन लोगोंके पीछे पड़ी हुई थी, पर वह इन लोगोंका पता नहीं लगा पा रही थी।

दुर्भाग्यसे इनका एक साथी फूट गया और उसने इन लोगोंके कार्य-स्थलोंकी जानकारी पुलिसको दे दी। भुतहा मकानमें इन लोगोंने आधी राततक अपना काम किया। साइक्लोस्टाइल मशीनसे कई हजार पर्चे छापे और पर्चे छापकर चक्रधर मकानकी छतपर गये। छतपर जाकर वे चौकन्नी दृष्टिसे चारों ओर देखने लगे। चक्रधर छतपर लगी रेलिंगके एक झरोखेमेंसे झाँककर देख रहे थे। इस भुतहा मकानके चारों ओर चहारदीवारी है। यह चहारदीवारी लगभग चार-पाँच फीट ऊँची रही होगी। चक्रधरने देखा कि चहारदीवारीके बाहर, पर चहारदीवारीसे सटे हुए एक व्यक्ति खड़ा होता है, खड़ा होनेपर उसका सिर दिखलायी देता है और फिर वह गप्पसे बैठ जाता है। चक्रधरको संदेह हो गया कि यह पुलिसका इंफार्मर (INFORMER) अर्थात् पुलिसको सूचना देनेवाला व्यक्ति है। चक्रधर और अधिक ध्यानपूर्वक देखने लगे तो उस व्यक्तिकी खाकी कमीज दिखलायी दी। इतना दिखलायी देते ही चक्रधरका संदेह दृढ़ हो गया। चक्रधरके ध्यानमें यह बात आ गयी कि हमलोग पुलिसद्वारा घेर लिये गये हैं। यह सिपाही पुलिस अधिकारीकी ओरसे चौकसी रखने तथा सूचना देने (TO WATCH AND TO INFORM) के उद्देश्यसे नियुक्त किया गया है। यही कारण है कि वह थोड़ी-थोड़ी देरमें उठ-उठ करके देखता रहता है।

चक्रधर तुरंत छतसे नीचे आये। इस समय उस भुतहा मकानमें कुल तीन व्यक्ति थे। एक चक्रधर खुद दूसरे चक्रधरका सहयोगी और तीसरे भोजन बनानेवाला रसोइया। रसोइया बुड्ढा था। चक्रधर तथा उनके मित्र, दोनोंने मिलकर वह साइक्लोस्टाइल मशीन, वे छापे गये पर्चे और अन्य सामग्री, वह सब एक बड़े बोरेमें रखकर बाँध दिया। फिर चक्रधरने उस बुड्ढे रसोइयेसे कहा— हमलोग तो पुलिसद्वारा घेर लिये गये हैं, पर तुम निकलकर भाग जाओ तथा सामानसे भरा यह बोरा लेते जाओ। मैं इस लम्बी रस्सीको छतपरसे मकानके बाहर फेंकता हूँ। यह रस्सी मोटी और मजबूत है, टूटेगी नहीं। इस रस्सीको मैं भीतरसे पकड़े रहूँगा। तुम इस रस्सीके सहारेसे मकानके पीछे उतर जाओ। साथ ही यह बोरा भी

सावधानीपूर्वक उतार लो। मकानके पीछे गड्ढा है। उसमें यह बोरा दबा देना तथा बालू-मिट्टीसे ढक देना। एक सावधानी और रखना। अपने पैरके निशान अपने हाथसे मिटा देना। इधर अब पुलिस आनेवाली है। तुम यह सब करके दूरसे हमलोगोंके सामनेसे निकल जाना। तुमको देख लेनेपर हमलोग समझ लेंगे कि तुम सुरक्षित निकल गये हो और बोरा भी सुरक्षित रख दिया गया है।

उस बुड्ढे रसोइयेको जैसे-जैसे समझाया गया था, उसने वैसे-वैसे ही सारा काम किया। वह बुड्ढा बोरा लेकर मकानके पीछे उतरा ही था कि मकानके दरवाजेको खटखटाया जाने लगा। यह बड़े सन्तोषकी बात थी कि उस बुड्ढेके उतरनेतक कोई बाधा सामने नहीं आयी। खटखटानेकी आवाजसे चक्रधरको अनुमान हो गया कि पुलिस आ गयी है। पुलिसके एक व्यक्तिने दरवाजेपर थाप देते हुए कहा— दरवाजा खोलो।

मकानके भीतरसे चक्रधरने कहा— क्यों, क्या बात है?

त्वरा दिखलाते हुए पुलिसने कहा— जल्दी खोलो, दरवाजा जल्दी खोलो।

चक्रधरने कड़कती आवाजमें कहा— आप कौन हैं?

पुलिसके सिपाहीने भी कड़कती आवाजमें कहा— पहले दरवाजा खोलो तुम!

चक्रधर तो जान रहे थे कि पुलिस आयी है और दरवाजा खुलवाना चाह रही है, पर चक्रधर तो जान-बूझ करके देर कर रहे थे और पुलिसको बातचीतमें अटकाये रखना चाहते थे, जिससे उस बुड्ढेको योजनानुसार कार्य करनेके लिये तथा निकल भागनेके लिये पर्याप्त समय मिल जाये। बातचीतमें अटकाये रखनेके उद्देश्यसे चक्रधरने जब दरवाजा नहीं खोला तो पुलिसने दरवाजा तोड़नेकी धमकी दी। इसे सुनकर चक्रधरने रोबदार भाषामें कहा— इस प्रकारकी धमकी देना कौन-सा शराफतका काम है?

जबतक सम्भव हो सका, पुलिसको बातचीतमें उलझाये रखा गया। अन्तमें दरवाजा खोलना तो था ही और वह खोल दिया गया। दरवाजेको खोलते ही पुलिसने चक्रधरको और उनके मित्रको हिरासतमें ले लिया। पुलिसकी हिरासतमें ये दोनों मकानके बाहर खड़े थे और पुलिसके सिपाही मकानकी तलाशी ले रहे थे। इस बीच चक्रधरके साथीने चक्रधरसे कहा— एक भूल हो गयी। दानदाताओंके नामकी तालिकावाला कागज मेरे पाकेटमें ही है। वह भूलसे

मेरे पाकेटमें रह गया। यदि यह कागज पुलिसके हाथमें पड़ गया तो पुलिस उनको तंग करेगी।

चक्रधरने कहा, कहा संकेतपूर्वक ही– अपने हाथको पाकेटमें ले जाकर अँगुली और अँगूठेके नखोंसे उस कागजके टुकड़े-टुकड़े कर दो, इतने महीन टुकड़े कर दो कि उनको जोड़ा न जा सके।

उस साथीने वैसा ही किया। मकानमें तलाशी चलती रही। इस समय चक्रधरने देखा कि वह बुड्ढा रसोइया काफी दूरीपर निकलकर चला जा रहा है। रातके अँधेरेमें भी चक्रधरने उसकी चाल आदिसे उसको पहचान लिया। उसको देखकर चक्रधरका मन आश्वस्त हो गया कि वे पर्चे तथा वह साइक्लोस्टाइल मशीन सुरक्षित है। मकानकी तलाशीमें पुलिसको कुछ मिला नहीं। मकानके अन्दर राजा साहबके हाथीका झूल पड़ा हुआ था। उस झूलका मूल्य उस सस्तीके समयमें भी लगभग तीन हजार रुपयोंका होना चाहिये। वह झूल ही पुलिसके हाथ लगा और पुलिस उसे लेती गयी।

गुप्तचर विभागके प्रमुख अधिकारी प्रदीप बाबू भी मकानके बाहर चक्रधरके साथ खड़े थे। ये प्रदीप बाबू वे ही हैं, जिन्होंने चक्रधरको बाँदाके तीन पुलिस अधिकारियोंकी हत्याके काण्डमें फँसाना चाहा था। पुलिस परेशान थी कि मकानके अन्दर कुछ मिला नहीं। चक्रधरने प्रदीप बाबूसे कहा– जब कुछ होगा, तभी तो आपको कोई चीज मिलेगी। हमारे पास दानदाताओंकी तालिका थी, वह हमलोगोंने नष्ट कर दी है। वह विनष्ट सूची आप चाहें तो ले सकते हैं।

चक्रधरके ऐसा कहे जानेपर चक्रधरके साथीने तालिकाके अति महीन टुकड़े प्रदीप बाबूके हाथमें दे दिये। पुलिसको इस बातका बड़ा खेद था कि कोई चीज उनके हाथ नहीं लगी। पुलिसने चक्रधरको गिरफ्तार कर ही लिया था। पुलिसने चक्रधरपर मुकदमा चलाया। इस मुकदमेका नाम था 'गया षडयन्त्र काण्ड' (GAYA CONSPIRACY CASE)। फैसला देते समय न्यायालयने चक्रधरको छः मासकी सजा सुना दी। राजनैतिक बन्दीके रूपमें चक्रधरको गया जेलमें डाल दिया गया।

चक्रधर गया जेलमें सूर्यास्त होनेके समय आये। अन्य कैदियोंको अपने-अपने वार्डमें बन्द कर दिया जा चुका था। गया जेलमें पहलेसे

अनेक राजनैतिक बन्दी थे। महात्मा गाँधीने अँगरेजी सत्ताके विरुद्ध असहयोग आन्दोलन छेड़ रखा था और जो व्यक्ति राजनैतिक आन्दोलनमें भाग लेता, अँगरेजी सरकार उसे जेलमें बन्द कर देती थी। लोगोंमें देशके लिये प्राणोत्सर्गकी भावना इतनी अधिक जाग उठी थी कि जेलकी यातनाओंका वर्णन सुनकर भी लोग जेल जानेमें हिचकते नहीं थे। गयाके एक स्थानके महन्त पूज्य श्रीभागवतदासजी महाराज भी उस समय गया जेलमें थे। महन्त होकर भी वे राजनैतिक आन्दोलनमें खुलकर प्रमुख रूपसे भाग लेते थे। उनको अपने वार्डमें यह सूचना मिली कि आज राजनैतिक बन्दीके रूपमें एक किशोर बालक आया है और इतनी छोटी आयुका और कोई भी बन्दी नहीं है।

इतना सुनते ही महन्त श्रीभागवतदासजीके मनमें उस किशोर बालकको देखनेकी उत्सुकता जाग उठी, पर यह तो प्रातःकाल वार्ड खुलनेपर ही हो सकता था। सबेरे वार्ड खुलते ही महन्तजी उससे मिले और परिचय पूछा। तब चक्रधरने कहा— मैं एक ब्राह्मण बालक हूँ। गया जिलामें अरवलके पास फखरपुर ग्रामका रहनेवाला हूँ। क्रान्तिकारी गतिविधियोंके कारण मुझको पकड़ा गया और छः मासकी सजा भुगतनेके लिये मुझे जेल भेज दिया गया है।

चक्रधरके गौर वर्णवाले छरहरे शरीरमें व्याप्त ओजस्विता-तेजस्विता-निर्भयता-सुदृढ़ताको देखकर केवल महन्तजी ही नहीं, सारे राजनैतिक बन्दी बड़े विस्मित हो रहे थे। गया जेलके जीवनका वर्णन करते हुए महन्त श्रीभागवतदासजीने बतलाया— एक दिन वह बच्चा चक्रधर मेरे पास सुबह आया और सुबहवाली प्रार्थनामें शामिल हुआ। उसकी सुरीली आवाजमें मधुरता कूट-कूट कर भरी हुई थी। उस दिनसे वह सामूहिक प्रार्थना कराने लगा। कुछ दिन बाद जेलमें रामायण कथा शुरू हुई। बन्दियोंमें जो विद्वान थे, वे भाषण दे रहे थे। बच्चा चक्रधर भी बालकाण्डकी कथाको ध्यान पूर्वक सुन रहा था। इतनेमें मेरे प्रिय मित्र श्रीयोगेश्वरप्रसादजीकी नजर चक्रधरपर पड़ी। उन्होंने देखा कि चक्रधरकी आँखें बिलकुल बन्द हैं। श्रीयोगेश्वरप्रसादजीने समझा कि यह बच्चा सो रहा है, अतः उससे पूछा गया कि क्या तुम सो रहे हो? इसपर चक्रधरने कहा कि मैं सो नहीं रहा हूँ, बल्कि भगवान्

श्रीरामचन्द्रजीकी बाल्यावस्थाकी कल्पना कर रहा हूँ। उसके ये विचार सुनकर हमारे सभी साथी मुग्ध हो गये। तब मैंने उससे पूछा कि क्या तुम रामायण पढ़ सकते हो? उसने कहा कि यदि आपकी आज्ञा हो तो पढ़कर सुनाऊँ। दूसरे दिनसे ही चक्रधर रामायण पढ़कर सबको सुनाने लगा। उसके पढ़नेकी शैली और स्वरकी मिठासपर सभी रीझ गये। सभी लोग कहने लगे कि यह एक होनहार बालक है। युवक चक्रधर जबतक रामायण पढ़ता था, तबतक सभा एकदम शान्त रहती थी। उसके रामायण-पाठकी चर्चा जेलमें बढ़ती चली गयी। लोग उसके पाठको सुननेके लिये उतावले नजर आने लगे। एक दिन शामको चार बजे वार्ड बन्द होनेके पहले युवक चक्रधर रामायण सुना रहा था। उसी समय प्रधान जेलर आया। यह अँगरेज था और राजनैतिक कैदियोंको बराबर पीटते रहता था। उसने आते ही चक्रधरके सिरपरकी लम्बी शिखा पकड़कर उसको झकझोर दिया और अपने जूतेकी ठोकरसे मारा। उसने रामायण छीनना चाहा, लेकिन चक्रधर रामायणका पाठ करता ही रहा। अंतमें उसने चक्रधरको उठाकर पटक दिया और फिर वार्डमें बन्द करवा दिया। इस घटनासे युवक चक्रधरकी ख्याति जेलमें और भी बढ़ गयी।

गया जेलके इस सुप्रिंटेंडेंटका नाम था मेजर वर्क। यह वही जेल सुप्रिंटेंडेंट है, जिसका वर्णन पहले आ चुका है और जो लँगड़ा साहबके नामसे पुकारा जाता था। इन लँगड़े साहबका 'विशेष परिचय' देना जरूरी लग रहा है। आयरलैंडका रहनेवाला यह आयरिश मेजर वर्क सेना-विभागसे जेलरके पदपर कार्य करनेके लिये आया था। स्वभावसे वह अत्यन्त क्रूर था। वह इतना क्रूर था कि दया-सुहृदता-सज्जनताके कणांश भी उसके व्यक्तित्वमें नहीं थे। मेजर वर्कको यदि यह ज्ञात हो जाये कि अमुक राजनैतिक बन्दी अँगरेजी शासनके विरुद्ध बहुत सक्रिय रहा है और देशभक्तिके कार्योंमें अधिक भाग लेता रहा है तो उस राजनैतिक कैदीके बन्दी-विवरण-पत्र (PRISONER RECORD CARD) पर वह NOTORIOUS (अर्थात कुख्यात) लिख दिया करता था। जिस बन्दीके बन्दी-विवरण-पत्रपर 'कुख्यात' लिख दिया गया हो, उसे वह बहुत तंग करता और बड़ा कष्ट देता था। इससे भी जब उसको

सन्तोष नहीं होता तो एक वाक्य और लिख दिया करता था— I will take care of him अर्थात् मैं इसकी सँभाल कर लूँगा। 'सँभाल'के नामपर वह राजनैतिक कैदियोंके दिमागको ठौर-ठिकाने लगा देनेका हौसला रखता था। भीषण यातनाओंके द्वारा देशभक्तोंके दिमागपरसे देश-भक्तिकी भावनाके भूतको भगा देनेमें वह अपनेको माहिर समझता था। भीषण यातनाके बाद भी यह भूत यदि नहीं उतर पाता था तो उसके लिये सँभालनेका अर्थ होता था मौतके घाट ठीक तरहसे उतार देना। वह ऐसी सँभाल करता था कि उस राजनैतिक कैदीको यमराजके दूतोंके हाथ सँभला देता। वह नर-पिशाच अपना भारी-भरकम मिलिट्री बूट पहनकर कैदीकी छातीपर चढ़ जाता और चढ़कर इतनी जोरसे हुमचता कि छातीकी हड्डियाँ तभी तड़-तड़-तड़ करती हुई टूट जातीं और वह कैदी अपने मुँहसे बलबला करके खूनकी उल्टी करते हुए अपनी जीवन-लीला तत्क्षण समाप्त कर देता। जेलके रजिस्टरमें तो यही लिखा जाता कि वह कैदी बीमारीसे ग्रस्त होकर मृत्युको प्राप्त हो गया। अँगरेजी जमाना था, किसमें साहस था, जो इस गलत रिपोर्टका विरोध करे। वह मेजर वर्क अपनी राक्षसी प्रवृत्तिके कारण बहुत 'यश' कमा चुका था। उसके नामसे कैदी थर-थर काँपते थे। न जाने कितने राजनैतिक कैदी मेजर वर्ककी राक्षसी प्रवृत्तिके शिकार होकर कालके गालमें जा चुके थे।

जिस प्रकार महा क्रूर-कर्मा अति क्रूरात्मा मेजर वर्क अपने आसुरी स्वभावके कारण विख्यात था, उसी प्रकार चक्रधर भी अपनी हठवादिता, अपनी ऐंठ, अपनी अकड़, अपनी निष्ठा, अपनी देश-भक्तिके लिये विख्यात हो चुके थे। चक्रधरके मनमें स्वातन्त्र्य-प्रेम अपनी सीमापर था। यह मान लिया कि भारतपर अँगरेजोंका शासन है, अँगरेजोंके हाथमें राज-दण्ड है, अँगरेजोंकी सैन्य-शक्तिके समक्ष भारत विवश है और भारतीय जनता पराधीन है, पर आत्मा तो पराधीन है नहीं। आत्मा स्वतन्त्र है और चिन्तन स्वतन्त्र है। जेलका बन्दी हो जाना एक विवशता है, इसके बाद भी मस्तिष्क मुक्त है और मस्तिष्कके विचार मुक्त हैं, हृदय मुक्त है और हृदयकी भावनाएँ मुक्त हैं। भविष्यमें एक दिन ऐसा अवश्य आयेगा, जब अँगरेजोंकी पाशविक

सैन्य-शक्तिको हिन्दू-भूमिकी सच्ची दिव्य सत्त्व-शक्तिके समक्ष झुकना ही पड़ेगा। अपने इस स्वातन्त्र्य-प्रेमके कारण चक्रधरको जेलमें न जाने कितनी विकट विपरीतताओंका सामना करना ही पड़ा, परंतु वे अपनी टेकपर टिके रहे, एकदम अड़े रहे। चक्रधरकी दृढ़ताको देखकर मेजर वर्कने उन्हें जनरल-वार्ड, जहाँ सारे साधारण कैदी रखे जाते हैं, वहाँसे अलग करके तनहाई (CELL, जहाँ फाँसी-सजा-प्राप्त कैदी अकेले रखे जाते हैं, उस छोटी-सी कोठरी) में बन्द कर दिया।

मेजर वर्कने जेलके कैदियोंपर एक नियम लाद दिया था। जब वह जनरल-वार्ड और तनहाईके कैदियोंके पास निरीक्षणार्थ जाया करता था तो सारे कैदियोंको वार्डके बाहर एक पंक्तिमें खड़ा हो जाना पड़ता था। जेलके वार्डर लोगोंकी यह जिम्मेदारी थी कि वे मेजर वर्कके आनेके पूर्व ही सभी कैदियोंको एक पंक्तिमें खड़ा कर दिया करें। खड़े किये गये कैदियोंमेंसे जिस कैदीके सामने वह मेजर वर्क आता था, उस हर कैदीके लिये नियमतः यह जरूरी था कि वह कैदी अपने दोनों हाथ ऊपर कर ले। हथेली खोलकर दाहिने हाथकी हथेली दाहिने कंधेके पास और बाँये हाथकी हथेली बाँये कंधेके पास कर ले। प्रायः सभी कैदी भयाक्रान्त होकर अपना-अपना हाथ उठा ही लिया करते थे। जो कैदी ऐसा नहीं करता था, वह मेजर वर्ककी राक्षसी क्रूरताका शिकार बनता था। जेलके वार्डरोंद्वारा उस कैदीपर डंडोंकी वर्षा करवाना तो साधारण बात थी।*

यही विषम परिस्थिति चक्रधरके भी सामने आयी। उस जेलके प्रधान चिकित्सक एक बंगाली बाबू थे। वे बंगाली बाबू चक्रधरकी अँगरेजी भाषापर मुग्ध थे। केवल उच्चारणकी सुन्दरतासे ही नहीं, अपितु शब्दावलीकी श्रेष्ठता और अभिव्यक्तिकी कुशलतासे वे बंगाली

---

*मेजर वर्क अपने देशको वापस नहीं लौट पाया। उसकी क्रूरता ही उसकी मौतका कारण बन गयी। क्षुब्ध क्रान्तिकारियोंने एक गुप्त योजना रची और वह योजना क्रियान्वित हुई। एक बार जब वह जेलके कार्यालयमें बैठा हुआ कार्य कर रहा था, उसी समय एक क्रान्तिकारीने कार्यालयके रोशनदानसे उसे अपनी पिस्तौलका निशाना बनाया और वह वहीं ढेर हो गया।

बाबू बड़े प्रभावित थे। उनको आश्चर्य होता था कि यह चक्रधर मिश्र अभी मात्र युवक ही है और इतनी छोटी आयुमें यह इतनी उत्तम अँगरेजी कैसे बोल लेता है। चक्रधरके इस गुणके कारण उन प्रधान चिकित्सक बंगाली बाबूके मनमें कुछ सहानुभूति जग गयी थी। इन बंगाली बाबूने बड़े प्यारपूर्वक समझाते हुए चक्रधरसे कहा– जेलरके आनेपर हाथ उठा देनेमें क्या हर्ज है? यदि हाथ नहीं उठाते हो तो जानका खतरा है। यह मेजर वर्क कई कैदियोंकी जान ले चुका है। तुम्हारी भी जान ले लेगा।

उन बंगाली बाबूसे चक्रधरने यही कहा– Death is horror to you but play for me. (मृत्यु आपके लिये भयावह हो सकती है, पर मेरे लिये खेल है।) अब रही बात ऊपर हाथ उठानेकी। बस, बातकी ही तो बात है। यदि हाथ ऊपर उठा दिया तो फिर टेक क्या रही? फिर तो मैं अपनी टेकसे गिर गया।

स्वतन्त्र-मति चक्रधर इस बातके लिये तनिक भी तैयार नहीं थे कि मेजर वर्कके आनेपर मैं अपने हाथको उठाऊँ। चक्रधरको स्पष्ट लग रहा था कि हाथ नहीं उठानेका अर्थ है मृत्युकी ओर पैर बढ़ाना। इस विकट परिस्थितिमें चक्रधरने भगवानसे कातर प्रार्थना मन-ही-मन करनी आरम्भ कर दी–मेरे प्राण भी बचें और मेरी प्रतिष्ठा भी बचे। न तो मेरी जीवन-लीलाकी समाप्ति हो और न मुझे हाथ उठाना पड़े। इस असम्भवको आप ही सम्भव कर सकते हैं। आप सर्व-समर्थ हैं। आपके लिये कौन-सी वस्तु असम्भव है? मेरे प्राणोंकी और मेरी प्रतिष्ठाकी, दोनोंकी रक्षा आपके हाथमें है।

मेजर वर्क जब निरीक्षण करनेके लिये आया तो सारे कैदियोंको एक पंक्तिमें खड़ा किया गया। उस पंक्तिमें चक्रधर भी खड़े थे। जिस कैदीके सामने मेजर वर्क गया, उन सभीने अपने हाथ उठाये। मेजर वर्क जब पंक्तिमें खड़े चक्रधरके सामने आया तो चक्रधरने अपने हाथ नहीं उठाये। मेजर वर्कके साथ पाँच वार्डर चला करते थे। उन्हीं वार्डरोंको आदेश देकर वह कैदियोंको डंडोंसे पिटवाया करता था। जब चक्रधरने हाथ नहीं उठाया तो जेलरके साथवाले वार्डर सोचने लगे– यह कैसा मूर्ख लड़का है, जो जानबूझ करके अपनी जानसे हाथ धोना

चाहता है। यह लड़का अपना हाथ उठाता नहीं और जेलर तुरंत मृत्युके हवाले कर देगा। यह नादान तो अपनी मौतको जबरदस्ती बुलावा दे रहा है।

वे वार्डर तो विगत अनुभवोंके आधारपर यही सोच रहे थे कि अब इस लड़केके सिरपर मौत नाच रही है। जिस तनहाईमें यह लड़का रखा गया है, उससे अगली तनहाईवाली जो दो कोठरियाँ हैं, उनके दोनों कैदियोंको यह जेलर कुछ दिन पहले ही अपनी जिद्दके कारण मौतके घाट उतार चुका है।

चक्रधरके द्वारा हाथ न उठाये जानेके कारण हर क्षण काली भयावनी आशंका गहरी होती चली जा रही थी। वह मेजर वर्क चक्रधरके सामने लगभग पाँच मिनटतक खड़ा रहा। चक्रधरने अपने हाथ नहीं उठाये। वे पीठकी ओर हथेलीमें हथेली दिये खड़े रहे। मेजर वर्क सामने खड़ा-खड़ा सीटी बजाता रहा। भगवानने उसकी आँखोंपर क्या जादू कर दिया, यह तो भगवान ही जाने। मेजर वर्कको चक्रधर दिखलायी नहीं दे रहे थे, अथवा मेजर वर्कको चक्रधरके स्थानपर कुछ और दिखलायी दे रहा था, अथवा मेजर वर्कको अपने नियमकी अब विस्मृति हो गयी थी, उस समय क्या हुआ, यह तो भगवान ही जाने, परंतु इतना तो सबने देखा कि बिना-हाथ-उठाये, पीठकी ओर दोनों हाथ एक-दूसरेसे पकड़े हुए चक्रधर खड़े रहे और वह मेजर वर्क चार-पाँच मिनटतक सीटी बजाते हुए खड़ा रहा। इसके बाद वह आगे बढ़ गया।

ज्यों ही मेजर वर्क आगे बढ़ा, उस समय भगवानके प्रति चक्रधरके मनकी भावनाओंका वेग कितनी प्रबल गतिसे बह चला, वह तो केवल अनुभवकी वस्तु है। 'भगवानने मेरी टेक रख दी। भगवान हैं, वे प्रार्थना सुनते हैं, वे आर्तकी रक्षा करते हैं, वे असम्भवको सम्भव बना देते हैं, उनकी दया असीम है, उनकी करुणा अपार है', इस प्रकारके भावोंसे उसका हृदय अत्यधिक भरा हुआ था। इसी क्षण उसके मनमें यह विचार उठा कि जो भगवान ऐसे परम सुहृद हैं और इतने अकारण कृपालु हैं, उन सर्वसमर्थ भगवानकी आराधनामें ही जीवनके शेष दिन व्यतीत करना है।

चक्रधरके मनमें ऐसा विचार उठा, परंतु आगे आनेवाली

घटनाओंको देखकर ऐसा अनुमान होता है कि भगवानने चक्रधरको अधिकाधिक विषम परिस्थितियोंमें पुनः-पुनः डाला, जिससे चक्रधरके मनका यह विचार और भी परिपक्व हो जाये। तपकर ही सोना चमकता है। किसी विचित्र अचिन्त्य ईश्वरीय विधानके फलस्वरूप चक्रधर इस बार बच गये और यही क्या कम बात है कि इस समय चक्रधर मेजर वर्कके पैरोंके भारी-भरकम प्राणलेवा मिलिट्री बूटके नीचे नहीं आ पाये। यही बहुत है कि जेलकी नारकीय यन्त्रणाओंके बीच चक्रधरका जीवन बच गया, पर अगली बार निरीक्षणके समय चक्रधरको मेजर वर्ककी क्रूरताका शिकार होना पड़ा। फिर मेजर वर्क कैदियोंके निरीक्षणार्थ आया। सारे कैदी पंक्ति-बद्ध खड़े कर दिये गये और चक्रधर भी पंक्तिमें खड़े थे। मेजर वर्क चक्रधरके सामने आया और अपने सामने मेजर वर्कको देखकर भी चक्रधरने अपने हाथ नहीं उठाये। मेजर वर्कको क्रूर आँखोंमें विकराली वक्रता छा गयी। क्रोधके मारे उसका चेहरा लाल हो उठा और उसने उन पाँच वार्डरोंको आदेश दिया—पीटो इस लड़केको।

वे पाँचों वार्डर आगे बढ़े। पीटनेके स्थानपर वे चक्रधरका हाथ पकड़कर जबरदस्ती उठाने लगे। वे वार्डर जबरदस्ती उठा भी नहीं रहे थे, अपितु जबरदस्ती उठानेका नाटक कर रहे थे। उनको आदेश तो पीटनेका था, किंतु वे पीटने-मारने और डंडा लगानेके स्थानपर जबरदस्ती करनेका नाटक करने लगे।

इस नाटकका रहस्य तो बादमें खुला। उन पाँचों वार्डरोंको यह पता चला कि यह युवक चक्रधर मिश्र हमारे गाँवके पासवाले गाँवका है। ऐसी जानकारी मिलनेके बाद उनके अन्तरमें एक प्रकारका सद्भाव जाग उठा और इसीलिये वे चक्रधरका कुछ-न-कुछ बचाव करते ही रहते थे। इस किंचित् अनुकूलताके पीछे भी तो वही विचित्र अचिन्त्य ईश्वरीय विधान सक्रिय था। वार्डरोंके प्रयास करनेके बाद भी जब चक्रधरने हाथ नहीं उठाया तो मेजर वर्क क्रोधसे तिलमिला उठा और वह स्वयं ही घूँसोंसे चक्रधरको मारने लगा। चक्रधर तो उसी समय चक्कर खाकर अर्ध-मूर्च्छितावस्थामें वहीं जमीनपर गिर पड़े।

चक्रधरके कार्ड (बन्दी-विवरण-पत्र) पर NOTORIOUS (अर्थात्

कुख्यात) पहले ही लिख दिया गया था, अब एक शब्द PUNISHMENT (सजा, अर्थात् यह कैदी विशेष प्रकारसे दण्डनीय है, ऐसा संकेत) और लिख दिया गया। इसके बाद मेजर वर्कने आदेश जारी किया– चक्रधर मिश्रको पहननेके लिये 'टाट' दिया जाये।

'टाट' देनेके लिये चक्रधरको जेलके स्टोर (वस्तु-भण्डार) में ले जाया गया। ले गया जेलका एक वार्डर। उस वार्डरने चक्रधरसे कहा– मैं आपको जानता हूँ। आपके पिताजी मेरे पुरोहित हैं। मैं आपका यजमान हूँ। मैं इस जेलरके काले कारनामोंसे परिचित हूँ। इसने कई कैदियोंको मारते-मारते जान ले ली है। इसके चाल-ढालसे अब ऐसा लगता है कि यह आपकी भी जान लेनेके लिये उतारू हो गया है। मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप हाथ उठा दें।

चक्रधरने उस वार्डरसे उसके गाँवका नाम तथा उसके परिवारका परिचय पूछा। वह चक्रधरके गाँवसे सटे गाँवका रहनेवाला था। उस वार्डरके मनमें चक्रधरके प्रति वात्सल्य उमड़ रहा था, किंतु चक्रधर भी अपनी आदर्शवादिताको छोड़नेके लिये तैयार नहीं थे। किसी प्रकारसे चक्रधरने उस वार्डरको समझा-बुझा दिया।

विपत्ति अकेले नहीं आती। 'टाट'के नामपर चक्रधरको पहननेके लिये दिया गया नारियलकी जटासे बना टाट। कपासके धागेसे बने हुए कपड़ेका तो सवाल ही नहीं। नियमतः दिया जाना चाहिये था पटसन (जूट, JUTE) से बना टाट, पर दिया गया नारियलकी जटासे बना टाट। शरीरकी लज्जाके निवारणके लिये यही 'वस्त्र' मिला। इस समय चक्रधर तनहाईके अन्दर बीमार पड़ गये। शरीरपर खूब मार पड़ी ही थी। मारके कारण शरीरमें सूजन हो आयी और बड़ी वेदना हो रही थी। चक्रधरको ज्वर भी हो आया। केवल ज्वर ही नहीं, चक्रधरके शरीरपर छोटी चेचक भी निकल आयी। ये जाड़ेके दिन थे। घोर जाड़ा, ज्वरका प्रकोप, चेचककी बीमारी और नारियलका टाट, वह भी मात्र निम्नांग ढकनेके लिये। चक्रधरको लगभग नग्न रहना पड़ता था और जितना अंग ढका था, उसमें वह बड़ी ही चुभती थी। कष्टकी सीमा नहीं थी।

एक दिन जेलका सहायक जेलर चक्रधरके पास आया। वह मुसलमान था। उस मुसलमान जेलरके सामने चक्रधर अपने कष्टको

सुनाकर कहने लगे– इस नारियलकी टाटके स्थानपर कोई दूसरा वस्त्र मुझ चेचकके रोगीको देना चाहिये।

चक्रधरके इस निवेदनको सुनकर चक्रधरके कष्टको समझना और चक्रधरके प्रति सहानुभूति रखना तो दूर रहा, उस जेलरने अपने मुँहके पानकी पीकको चक्रधरके मुँहपर थूक दिया।*

उस तनहाईकी कोठरीमें चक्रधर अकेले अपने कष्टोंसे जूझ रहे थे। चक्रधर ब्राह्मण परिवारके थे, परिवारके वैष्णव वातावरणका संस्कार चक्रधरके मनपर था ही। इसके अतिरिक्त गाँवके कुम्हारद्वारा गाये जानेवाले पदकी पंक्ति भी रह-रह करके याद आ रही थी 'तेरे मालिक हैं दीनानाथ, सोच मन काँहे को करे'। जिस दिन मेजर बर्कने चक्रधरको घुस्सेसे मारा था और गहरी चोट आयी थी, उसी दिनसे चक्रधर मन-ही-मन जप रहे थे 'शंकर श्याम राधेश्याम सीताराम'। यही चक्रधरका मन्त्र था, जिसे वे जप रहे थे। उस संकटमें इस छोटे-से मन्त्रका निरन्तर जप हो रहा था और निरन्तर हो रही थी प्रार्थना भगवान शंकरसे कि प्राण भी बचे और प्रतिष्ठा भी बचे।

चक्रधर तनहाईवाली कोठरीमें पड़े हुए थे। उसी दिन चक्रधरको एक

---

*इन दिनोंकी याद आनेपर बाबा कई बार कहा करते थे– राजनैतिक क्षेत्रके आधुनिक नेतागण इस बातकी कल्पना भी नहीं कर सकते कि उस अँगरेजी शासनमें देश-सेवकोंको किस-किस प्रकारकी भीषण यातनाएँ और कठोर यन्त्रणाएँ सहनी पड़ती थीं। मैं उस तनहाईकी कोठरीमें नग्न शरीर, ज्वर-पीड़ित, चेचक-ग्रस्त नारियलकी टाटमें किस प्रकार जाड़ेकी रात काटता था, वह तो मैं भुक्त-भोगी ही जानता हूँ।

जेलमें बाबाको हलका विष भी दिया गया। बाबाको पता ही नहीं लगा कि विष दिया जा रहा है। विषकी प्रतिक्रियास्वरूप मुखके भीतर घाव हो गये। जेलसे बाहर आनेके बाद बाबाने कलकत्तेके एक वैद्यराजको ये घाव दिखलाये। बाबाने उस वैद्यराजको यह भी बतलाया कि जेलके भीतर मेरे कई एक साथियोंको इस प्रकारके घाव हो गये थे। उस घावको देखकर उन वैद्यराजने बतलाया कि यह तो विष-जनित-व्रण (POISON CASE) है। बाबाने भावी जीवनमें पुस्तकोंके आधारपर अपनी प्राकृतिक चिकित्सा स्वयं ही की। उससे कुछ लाभ अवश्य हुआ, परंतु शरीरका पाचन-संस्थान तो उस विषसे कुप्रभावित हो ही चुका था और इस विषका कुपरिणाम चक्रधरके शरीरसे अन्ततक चिपका रहा

दिव्यानुभव हुआ। यह दिव्यानुभव संध्याके समय हुआ। उस कोठरीसे गयाका एक दूर-स्थित पर्वत दिखलायी देता था। इसका नाम है ब्रह्मयोनि पर्वत। इस पर्वतके शिखरपर एक वृक्ष है। यह विशाल वृक्ष लताओंसे आच्छादित है। लताओंकी छायामें भगवान शंकर खड़े हुए हैं। वहाँसे भगवान शंकरने चक्रधरको दर्शन दिया। उनका हाथ अभय-दानकी मुद्रामें उठा हुआ था और वे चक्रधरसे कह रहे थे– तुम निश्चिन्त रहो, तुम्हारा कुछ नहीं बिगड़ेगा। मैं तुम्हारी रक्षा कर रहा हूँ।

इससे चक्रधरको बड़ी सान्त्वना मिली। तभी चक्रधरके मनमें एक विचार स्फुरित हुआ कि यदि मेरा तबादला किसी दूसरे जेलमें हो जाये तो मेरे प्राणोंकी रक्षा हो सकती है। उस गया जेलमें एक और सहायक जेलर था। उसका नाम था श्रीहरिपद बाबू। श्रीहरिपद बाबूकी चक्रधरके प्रति थोड़ी सहानुभूति थी। चक्रधरने श्रीहरिपद बाबूसे दो-तीन दिनके अन्तरसे दो बातें कहीं। पहली बात चक्रधरने यह कही– आप यह नारियलका टाट बदलवा दें। चेचक-ग्रस्त होनेसे शरीरको इससे बड़ा कष्ट होता है।

श्रीहरिपद बाबूने कहा– किसी बड़े अधिकारीकी आज्ञाके बिना ऐसा करना सम्भव नहीं है। इसके लिये मैं कोशिश करूँगा।

अगले ही दिन जेलका कोई बड़ा अधिकारी जेलमें निरीक्षणार्थ घूम रहा था। उसके साथ श्रीहरिपद बाबू भी थे। उस अधिकारीसे चक्रधरने कहा– यह नारियलका टाट बदलवा देना चाहिये।

आशा तो नहीं थी, इसके बाद भी चक्रधरने कहा। चक्रधरके ऐसा कहते ही श्रीहरिपद बाबूने सहारा लगाया तथा उस अधिकारीसे निवेदन किया– यह लड़का चेचकसे बीमार है। बीमारीके कारण कुछ रियायत इस लड़केको मिलनी चाहिये।

चक्रधरके अनुरोधका श्रीहरिपद बाबूने अनुमोदन किया और उस अधिकारीको बात जँच गयी। उस अधिकारीने नारियलके टाटको बदल देनेकी स्वीकृति प्रदान कर दी। इस स्वीकृतिकी ओटमें श्रीहरिपद बाबूने चक्रधरको पर्याप्त सुविधा प्रदान की।

दो-तीन दिनके अन्तरपर चक्रधरने दूसरा अनुरोध श्रीहरिपद बाबूसे किया– आप कैम्प जेलमें मेरा तबादला करवा दीजिये।

कैम्प-जेलमें केवल राजनैतिक बन्दी ही रहा करते थे। सन् १९३०

ई. में महात्मा गाँधीने पूर्ण स्वराज्यकी प्राप्तिके लिये सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ किया था। दाण्डी नामक स्थानके पास समुद्रतटपर समुद्र-जलसे नमक बना करके उन्होंने अँगरेजी सरकारको चुनौती दी थी, जिसे नमक-आन्दोलन कहा जाता है। देश-भक्तिकी भावना जन-मानसमें इतनी अधिक उमड़ पड़ी कि सारे देशमें अँगरेजी सरकारके विरुद्ध प्रदर्शन होने लग गये। गाँधीजी सहित प्रमुख नेता जेलमें बन्द कर दिये गये। इतना ही नहीं, स्थान-स्थानपर अनेक लोग बन्दी बना लिये गये। इन राजनैतिक बन्दियोंकी संख्या इतनी अधिक थी कि इनके लिये कैम्प-जेल खोलने पड़ गये। कैम्प-जेलमें राजनैतिक बन्दियोंके साथ वैसा दुर्व्यवहार नहीं होता था, जैसा कि इस गया जेलमें। तबादलेकी बात सुनते ही श्रीहरिपद बाबूने कहा-- यह भला कैसे सम्भव है? तुम्हारे कार्ड (बन्दी-विवरण-पत्र) पर एक नहीं, दो-दो बातें लिखी हुई हैं। जिनके कार्डपर NOTORIOUS (कुख्यात) और PUNISHMENT (दण्ड), ये दो शब्द विशेष रूपसे लिखे हुए होते हैं, उनका तो तबादला यह मेजर वर्क होने ही नहीं देता। जब-जब ऐसे कैदियोंके तबादलेकी बात आती है तो मेजर वर्क तुरंत कहता है कि इस कैदीके सिरपर तो देश-भक्तिका भूत सवार है और इसको मैं यहाँसे कैसे जाने दे सकता हूँ। जबतक मेजर वर्कका हस्ताक्षर नहीं होगा, तबतक तबादला हो ही नहीं सकता। हस्ताक्षरके बाद तीन बार जाँच होती है। पहली बार स्वयं मेजर वर्क उन कैदियोंको एक पंक्तिमें खड़े करके देखता है, जिनका तबादला होना है। इसके बाद ये कैदी एक बैरकमें अलग रखे जाते हैं और फिर सहायक जेलर दूसरी बार जाँच करने आता है। इसके बाद प्रातःकाल जालीदार लारीमें कैदियोंको बैठानेके पहले जेलका वार्डर जाँच करता है। पहले तो मेजर वर्कसे स्वीकृति मिलनी ही अति कठिन है, यदि किसी विचित्र संयोगसे स्वीकृति मिल भी जाये तो इन तीन सीढ़ियोंको पार कर सकना महा-महा कठिन है।

चक्रधरने विनयपूर्वक श्रीहरिपद बाबूसे कहा– यह तो मैं भी समझ रहा हूँ कि जिस प्रकारकी कड़ी दृष्टि मेरे प्रति है, उसको देखते हुए तबादलेकी कोई सम्भावना नजर आ ही नहीं रही है, पर फिर भी क्या कोई ढंग बन सकता है? यह सर्वथा असम्भव ही लग रहा है, परंतु एक बार मेरा कार्ड जेलर साहबके सामने रखिये तो सही।

श्रीहरिपद बाबूने कहा– कुछ कैदियोंका कैम्प जेलमें तबादला होनेवाला है। उनके साथ मैं तुम्हारा कार्ड रख दूँगा। यदि अपनी धुनमें मेजर वर्कने स्वीकृतिका हस्ताक्षर कर दिया तो ठीक है और यदि वह पूछ बैठा कि चक्रधर मिश्रका यह कार्ड यहाँ कैसे आ गया तो मैं यह कह दूँगा कि भूलसे ऐसा हो गया (Sir, it is by mistake)।

श्रीहरिपद बाबूने वह कार्ड मेजर वर्कके सामने रखा और उसने तबादलेकी स्वीकृतिका हस्ताक्षर उस कार्डपर कर दिया। यह जानकर चक्रधरको बड़ा आश्चर्य हुआ। मेजर वर्कने कामकी झोंकमें तबादलेके लिये स्वीकृतिका हस्ताक्षर कर दिया, पर इससे ही तो सारी बात बन नहीं गयी, अभी तीन सीढ़ियाँ पार करनी शेष थीं। इस हर एक सीढ़ीको गहरी खाई कहना चाहिये, जिनके पार जा सकना महा-महा कठिन था। जिन-जिन कैदियोंका कैम्प जेलमें तबादला होना था, वे सारे कैदी एक पंक्तिमें खड़े किये गये। पंक्तिके हर कैदीका निरीक्षण करनेके लिये स्वयं मेजर वर्क आया। मेजर वर्कके साथ-साथ श्रीहरिपद बाबू भी थे। श्रीहरिपद बाबूने देखा कि पंक्तिके अन्तिम छोरपर चक्रधर खड़े हैं और वे मन-ही-मन सोचने लगे कि चक्रधरकी छँटनी अवश्य हो जायेगी। यह इसीलिये कि मेजर वर्क चक्रधरको अच्छी तरह पहचानता था। केवल छँटनी नहीं, चक्रधरको देखते ही वर्क साहबकी क्रोधाग्नि भभक उठेगी और खून पी लेनेके लिये उतारू होकर अपने प्राणलेवा मिलिट्री बूटके नीचे चक्रधरको जरूर रौंद डालेगा, जिसका अर्थ है घोर कष्टपूर्ण यातना और फिर तड़पते-तड़पते जीवनका अन्त। मेजर वर्क एक-एक कैदीकी जाँच करते-करते ज्यों-ज्यों चक्रधरकी ओर सरक रहा था, त्यों-त्यों चक्रधरका मन भी निराशासे भरता चला जा रहा था। इतना ही नहीं, चक्रधर यहाँतक सोच रहे थे कि मुझपर जो बीतेगी, वह तो बीतेगी ही, पर मेरे कारण कहीं श्रीहरिपद बाबूकी नौकरीपर आँच न आ जाये। अन्य राजनैतिक बन्दियोंको तथा वार्डरोंको भला क्या पता कि चक्रधर तथा श्रीहरिपद बाबूके भीतर विचारोंका कैसा भीषण तूफान उठा हुआ है। अब चक्रधरके बगलमें दो-तीन कैदियोंकी जाँच बाकी रह गयी थी। मेजर वर्कके हर बढ़ते कदमके साथ-साथ चक्रधरके दिलकी धड़कन भी बढ़ती चली जा रही थी। चक्रधरके बगलवाले कैदीके सामने ज्यों ही मेजर वर्क खड़ा हुआ, उस समय चक्रधरके दिलकी धड़कन

अपनी सीमापर थी और उसी समय एक बहुत बड़े जोरका धमाका हुआ। यह चौंका देनेवाला धमाका हुआ जेलके कार्यालयके पास। धमाका इतने जोरसे हुआ था मानो बमका विस्फोट हुआ हो। सबके कान खड़े हो गये। मेजर वर्ककी आँखें चौकन्नी हो गयीं और उसका मन अनेक प्रकारकी आशंकाओंसे भर गया। मेजर वर्क तुरंत कार्यालयकी ओर तेज गतिसे बढ़ चला। जानेपर पता चला कि किसी चीजका बहुत भारी बण्डल बहुत ऊँचेसे जमीनपर गिर गया है। इसे जानकर मेजर वर्ककी अन्यथा आशंकाएँ दूर हो गयीं। वह अपने कार्यालयमें चला गया, पर इस आकस्मिक धमाकेका सबसे अधिक लाभ चक्रधरको मिला कि चक्रधर जाँचकी इस पहली सीढ़ीको बिना किसी प्रकारकी कठिनाईके ही पार कर गये। मेजर वर्क फिर जाँच करनेके लिये नहीं आया।

चक्रधर और चक्रधरके साथ ही श्रीहरिपद बाबूने भीतर-ही-भीतर ठण्डी साँस ली, पर अभी तो दो सीढ़ियाँ और पार करनी शेष थीं। तबादलेवाले सारे कैदियोंको एक अलग बैरकमें भेज दिया गया। इस बैरकके इन कैदियोंकी जाँचका कार्य एक सहायक जेलरको सौंपा गया था। यह जाँच सूर्यास्तके बाद रातको होनेवाली थी। जाँचके कुछ पूर्व उस सहायक जेलरके पित्ताशयमें अचानक भीषण शूल (COLIC PAIN) उभर आया। ऐसी विवशताकी स्थितिमें उस सहायक जेलरने जाँचका कार्य श्रीहरिपद बाबूके जिम्मे लगा दिया। श्रीहरिपद बाबूके आनेसे चक्रधर जाँचकी दूसरी सीढ़ी भी सहज ही पार कर गये। शेष बची थी तीसरी सीढ़ी। तीसरी जाँच करनेवाले थे जेलके वार्डर। यह तीसरी जाँच होती तब, जब सूर्योदयके पहले इन कैदियोंको जेलसे निकालकर जालीदार गाड़ीमें चढ़ाया जाता था। यह गाड़ी पुलिसकी होती है तथा विशेष प्रकारसे बनवायी जाती है। पुलिसके कड़े पहरेके अन्दर कैदियोंको एक स्थानसे दूसरे स्थानपर ले जाया जाता है। इस तीसरी जाँचके समय खड़ा था वह वार्डर, जो चक्रधरके पिताजीका यजमान था। उसने रोषका नाटक करते हुए चक्रधरको गाड़ीकी ओर धक्का दिया। चक्रधर जालीदार गाड़ीमें चढ़ गये। भगवान शंकरकी कृपासे चक्रधर जाँचकी इन तीनों कठिन सीढ़ियोंको सरलतापूर्वक पार कर गये। पार करनेमें पद-पदपर शंका होती थी, पर

जिनकी कृपासे 'पंगु चढ़ई गिरिबर गहन', उनकी कृपासे क्या असम्भव है?

गया जेलमें तीन मास रहनेके बाद चक्रधर पटनाके फुलवाड़ी शरीफ कैम्प-जेलमें आ गये। यह कैम्प-जेल दो मीलकी भूमिपर फैला हुआ था। इस कैम्प-जेलमें लगभग चार-पाँच हजार कैदी थे। ये सारे राजनैतिक कैदी थे। यह कैम्प-जेल लोगोंकी बस्तीसे बहुत दूर था। इस कैम्प-जेलके चारों ओर अँगरेज घुड़सवार चक्कर लगाते हुए चौबीसों घंटा पहरा देते थे। इस कैम्प-जेलका प्रधान तो था एक अँगरेज, पर कैम्प-जेलकी व्यवस्थाके लिये तथा सँभालके लिये इस अँगरेजके नीचे बीस-पच्चीस सहायक एवं उप-सहायक जेलर कार्य कर रहे थे।

कैम्प-जेलमें आनेपर चक्रधरको पुराने राजनैतिक साथी मिले। उनसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई। सबको आश्चर्य हो रहा था कि तुमको न्यायालयसे कड़ी सजा सुनायी गयी थी, फिर इस कैम्प-जेलमें हम राजनैतिक कैदियोंके बीच कैसे आ गये। जो कुछ भी हो, कैम्प-जेलमें उन साथियोंके बीच चक्रधरका जीवन गया जेलकी अपेक्षा अधिक सुखमय व्यतीत होने लग गया। इस कैम्प-जेलमें सीमान्त प्रान्तके काजी अत्ताउल्ला खाँ भी थे। उनकी तर्क-शक्ति एवं वक्तृत्व-शक्ति बड़ी समृद्ध थी और वे विख्यात नेता थे। ये चक्रधरसे मिलकर अत्यधिक प्रभावित हुए। ये यहाँतक प्रसन्न हुए कि अपने आहारके लिये उपलब्ध पौष्टिक वस्तुएँ चक्रधरको दे दिया करते थे। कैम्प-जेलमें अपने कई साथियोंके साथ चक्रधरकी विभिन्न विषयोंपर चर्चा होती थी। यह चर्चा राजनैतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक आदि कई प्रकारकी होती। समय-समयपर परस्परमें विचार-गोष्ठीका आयोजन होता। ये गोष्ठियाँ शास्त्रीय सिद्धान्तोंके विचार-विनिमयका माध्यम बन गयीं। एक दिन गोष्ठी तन्त्र साधनापर हुई। उस दिन विचार-गोष्ठीके सभापति थे पं.श्रीतारादत्तजी भट्ट। पं.श्रीभट्टजी वृद्ध थे एवं अनुभवी व्यक्ति थे। उस गोष्ठीमें 'वाम मार्गीय तन्त्र साधना' पर चक्रधर लगभग आधा घंटा बोले। गोष्ठीकी समाप्तिपर पं.श्रीभट्टजीने चक्रधरको अकेलेमें बुलाया और पूछा— तुम जो बोले हो, वह बहुत सुन्दर बोले। अब यह बतलाओ कि जितना तुम बोले, वह तुम क्रियात्मक अनुभवके आधारपर बोले अथवा ग्रन्थोंके अध्ययनके आधारपर।

चक्रधरने विनम्र शब्दोंमें पं. श्रीभट्टजीसे कहा– मेरे बड़े भाईका तन्त्र साधनामें अच्छा प्रवेश है। कुछ बातें तो मैंने अपने बड़े भाईके मुखसे सुनी हैं और कुछ इस विषयमें मेरा पर्याप्त अध्ययन भी है। मेरा क्रियात्मक अनुभव कुछ नहीं है। बस, श्रुत एवं पठित ज्ञानके आधारपर ही मैं आज गोष्ठीमें बोला।

तब पं. श्रीभट्टजीने वात्सल्यमें भरकर चक्रधरसे कहा– बेटे! देखो, तुम कभी वाम मार्गका अनुसरण मत करना। वाम मार्गकी पद्धति अपनानेसे मेरा बड़ा पतन हुआ। ऐसा पतन तुम्हारा नहीं हो, इसीलिये यह बात मैं तुमसे कह रहा हूँ।

चक्रधरने पं. श्रीभट्टजीको आश्वासन देते हुए कहा– आपके निर्देशके अनुसार मैं कभी भी वाम मार्गका अवलम्बन नहीं करूँगा।

चक्रधरने इस आश्वासनको निभाया। परवर्ती जीवनमें जब चक्रधरने शक्तिकी उपासना की, तब भी चक्रधर द्वारा की जानेवाली वह मातृ-उपासना आद्यन्त सात्त्विक ही रही।

इस प्रकार कैम्प-जेलमें जीवनका समय अच्छी प्रकारसे बीत रहा था कि एक दिन बड़ा भीषण दृश्य उपस्थित हो गया। कैम्प-जेलके चार-पाँच हजार राजनैतिक कैदियोंमेंसे अधिकांश समाजके उच्च स्तरीय लोग थे। समाजके पढ़े-लिखे बुद्धिवादी लोग ही आगे बढ़कर अँगरेजी शासनके विरुद्ध आवाज उठा रहे थे और ऐसे गणमान्य लोगोंको ही अँगरेजी सरकारने जेलमें डाल दिया था। इन कैदियोंके भोजन बनानेके लिये तथा स्थानको स्वच्छ करनेके लिये जेलर उन राजनैतिक कैदियोंको भेजा करता था, जो किसी भीषण अपराधमें न्यायालयोंसे दण्डित हुए थे। इन अपराधी कैदियों (CRIMINAL PRISONERS) का व्यवहार बड़ा अभद्र हुआ करता था। पहले तो काम ठीकसे नहीं करना, फिर ऊपरसे हलके स्तरका व्यवहार करना। राजनैतिक कैदियोंने कई बार जेलरसे प्रार्थना की कि हमलोगोंके पास काम करनेके लिये ऐसे कैदी भेजे जायें, जिनका व्यवहार ठीक हो। इन अपराधी कैदियोंसे प्रायः झगड़ा-झंझट हो ही जाया करता था, इसीसे तंग आकर राजनैतिक कैदियोंने जेलरसे प्रार्थना की थी। बार-बार प्रार्थना करनेपर भी जेलके अधिकारियोंने इसपर ध्यान दिया ही नहीं। जेलके अधिकारियोंने जो उपेक्षा की, उसीके विरोधमें प्रदर्शन करनेका निश्चय

राजनैतिक कैदियोंने किया और सभी चार-पाँच हजार राजनैतिक कैदी बैरकके बाहर पंक्ति बनाकर बैठ गये। चक्रधर तो ग्यारहवीं पंक्तिमें थे। चक्रधरके सामने दस पंक्तियाँ थीं।

उस समय इन राजनैतिक कैदियोंकी सँभालका दायित्व जेलर मेजर परेरा पर था। मेजर परेरा मद्रासी था और इसके नीचे चार-पाँच सहायक जेलर थे। जेलके अधिकारियोंको भला कैसे सहन हो सकता था कि ये कैदी जेलकी व्यवस्थाके विरुद्ध प्रदर्शन करें। पंक्तिमें बैठे हुए राजनैतिक कैदियोंके सामने मेजर परेरा आया। उसके साथ उसके सहायक जेलर भी थे और थे लगभग दो सौ वार्डर। सभी वार्डरोंके हाथमें लाठी थी। राजनैतिक कैदियोंके सामने खड़े होकर मेजर परेराने कहा– सभी कैदी तुरंत बैरकमें चले जायें।

मेजर परेराके ऐसा कहनेके बाद भी उन चार-पाँच हजार राजनैतिक कैदियोंमेंसे कोई भी उठा नहीं। उठनेकी कौन कहे, कोई हिलातक नहीं। सभी पंक्तिमें बैठे रहे। दिये हुए आदेशको नहीं माननेसे मेजर परेरा चिढ़ गया और उसने रोष भरे शब्दोंमें सावधान करते हुए कहा– मैं फिरसे कह रहा हूँ कि आप सभी लोग बैरकमें चले जायें। मैं पाँच मिनटका समय देता हूँ। यदि आप लोग पाँच मिनटके भीतर बैरकके अन्दर नहीं जाते हैं तो आपपर लाठी चार्ज होगा।

पाँच मिनट बीत गया, पर कोई भी राजनैतिक कैदी अपने स्थानसे रंच मात्र टस-से-मस नहीं हुआ। मेजर परेराके दिमागका पारा चढ़ गया और उसने दो सौ वार्डरोंको आदेश दिया– चार्ज (CHARGE, अर्थात् लाठीसे मारो)।

आदेशके मिलते ही वे दो सौ वार्डर आगे बढ़े। इनमें आधे हिन्दू थे। इन हिन्दू सिपाहियोंने थोड़ी सभ्यता दिखलायी। वे अपने हाथकी लाठी आकाशमें घुमाते थे और ऐसा दिखलाते थे कि मानो तुरंत मार देंगे, परंतु उन्होंने प्रहार नहीं किया। यदि इन हिन्दू सिपाहियोंने मारा भी तो हलके-से मारा। इन वार्डरोंमें जो मुसलमान सिपाही थे, वे सब बलूचिस्तानके थे। उन मुसलमान सिपाहियोंने लाठीसे निर्मम प्रहार करना आरम्भ कर दिया। आगेकी पंक्तियोंमें बैठे हुए कैदियोंके सिर उस प्रहारसे फूट-फूट करके दो-दो फाँक होने लग गये। उन कैदियोंके सिर इस प्रकार फूट रहे थे मानो खरबूजा फूट रहा हो। रक्तसे भूमि सन गयी। वस्तुतः रक्तका प्रवाह बह

चला। वह प्रहार ऐसा भीषण और इतना क्रूर होता था कि आहत कैदी आह भी नहीं भर पाता था। प्रलयका विकराल दृश्य सामने था। वह प्रहार नहीं था, मृत्युका नग्न नृत्य था। चक्रधरके बगलमें बैठे एक कैदी गीताजीके श्लोकका पाठ करने लगे—

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही।।
(श्रीमद्गीता— २/२२)

जो कैदी भूमिपर धराशायी हो जाता, उसको स्ट्रेचरपर डालकर उसी समय अस्पताल भेज दिया जाता। मेजर परेराने देखा कि इस लाठी चार्जसे भी कैदी अपने स्थानसे उठनेका नाम नहीं लेते। सारे कैदी अपने-अपने स्थानपर जमकर बैठे हुए हैं। मेजर परेराने आदेश देकर सभी वार्डरोंको पीछे हटाया तथा सैनिकोंको बुलवाया। सैनिकोंके हाथमें राइफल थी। ये सैनिक चार सौ थे। इतना ही नहीं, मेजर परेराने और भी कई सौ अँगरेज सैनिक बुलवानेके लिये संदेश भिजवा दिया। ये अँगरेज सैनिक तो मार्गमें ही होंगे। मेजर परेराके आदेशपर ये चार सौ सैनिक घुटनेके बल बैठ गये। इनकी राइफलोंमें गोली भरी हुई थी। इन राइफलोंके मुँह कैदियोंकी ओर थे और सैनिकोंकी अँगुलियाँ राइफलके घोड़ोंपर लगी हुई थीं। बस, 'फायर' के आदेशकी देरी थी। आदेशके मिलते ही अँगुलियोंसे राइफलके घोड़े दब जाते और गोलियाँ चलने लग जातीं। इन चार सौ सैनिकोंके फायरिंग करनेके लिये बैठ जानेके बाद मेजर परेराने कैदियोंसे कहा— बस, पाँच मिनटका समय दे रहा हूँ। यदि आप लोग पाँच मिनटके भीतर बैरकमें नहीं जाते तो गोली चल जायेगी।

यमराजके चार सौ दूत सामने थे। मृत्यु साक्षात् रूपसे सामने थी। कोई भी कैदी मेजर परेराके आदेशको माननेके लिये तैयार नहीं था। सभी कैदियोंको मरणोन्माद हो आया था। लाठी-चार्जका भीषण स्वरूप देख करके भी सभी कैदी अपनी प्राणाहुति दे देनेके लिये तुले बैठे थे। प्रति मिनट कौन कहे, प्रति सेकेंड, अपितु प्रति क्षण वातावरण संगीन होता चला जा रहा था। उस कैम्प-जेलके कण-कणमें हर ओर भयावनी सनसनी छायी हुई थी। सभी कैदी मान बैठे थे कि हमारे

जीवनकी अवधिके अब केवल चार-पाँच मिनट शेष रह गये हैं। यह इसलिये कि मेजर परेराकी आँख अपनी घड़ीपर टिकी हुई थी। ज्यों ही पाँच मिनट पूरे होंगे, त्यों ही मेजर परेरा फायरके लिये आदेश दे देगा और इस आदेशके होते ही जमीन लाशसे पट जायेगी। पल-प्रति-पल परिस्थिति गम्भीरसे महागम्भीर और महागम्भीरसे महागम्भीरतर होती चली जा रही थी।

इस महा भयावनी विकराली विकट परिस्थितिमें एक मुसलमान सहायक जेलर आगे बढ़ा। मेजर परेराके नीचे जो चार-पाँच सहायक जेलर थे, उनमेंसे यह एक था। यह था बड़ा साहसी और बहुत सहृदय। उस सहायक जेलरने आगे आकर बैठे हुए कैदियोंके सामने मेजर परेरासे कहा— इस फायरिंगके जो भीषण कुपरिणाम होंगे, उसकी सारी जिम्मेदारी आपपर होगी। मैं इसका तनिक भी जिम्मेदार नहीं होऊँगा। इस नर-संहारके कारण सारे देशमें जो प्रतिक्रिया होगी, स्थान-स्थानपर जो प्रदर्शन और उपद्रव होंगे, उसकी सारी जबाव देही आपपर होगी।

सहायक जेलरके उस साहसको देखकर सभी राजनैतिक कैदी आश्चर्यचकित हो गये। इस सहायक जेलरके द्वारा ऐसा कहा जाते ही मेजर परेरा ढीला पड़ गया। मेजर परेराने उस सहायक जेलरसे कहा— आपका कहना ठीक है, पर ये कैदी बैरकके भीतर क्यों नहीं जाते?

यह सुनकर उस सहायक जेलरने कहा—आप सारी बात मुझपर छोड़ दें। मैं सँभाल लूँगा।

सहायक जेलरके इतना कहते ही मेजर परेरा वहाँसे हट गया और जेलके कार्यालयमें चला गया। इसके बाद उस सहायक जेलरने राजनैतिक कैदियोंके सम्मानमें अपने सिरपरसे अपना हैट उतारा, हैटको उल्टा कर लिया तथा उल्टे हैटको दोनों हाथोंसे पकड़ करके उन कैदियोंके सामने ऐसे कर दिया मानो याचना कर रहा हो। फिर अत्यन्त विनम्र शब्दोंमें उस सहायक जेलरने कहा— मैं आप लोगोंसे प्रार्थना करता हूँ कि आप लोग बैरकमें चले जायें। मैं भीख माँगता हूँ कि आप लोग बैरकमें चले जायें। आप लोगोंकी जो शिकायत होगी, मैं उसे अवश्य सुनूँगा और जहाँतक बनेगा, उसे दूर करनेकी कोशिश

करूँगा, पर आप लोग मेरी प्रार्थना मान लें। यदि मेरे द्वारा आपके प्रति कभी कोई गलत व्यवहार हुआ हो तो आप लोग मेरी प्रार्थना मत मानें, पर आप यदि यह समझते हों कि मैंने आपके साथ हमेशा अच्छा सलूक किया है तो मेरी इज्जत रखनेके लिये आप सभी लोग अभी बैरकमें चले जायें।

सहायक जेलरकी याचनापूर्ण विनीत भाषाने और उनके सौहार्दपूर्ण व्यवहारने सभी राजनैतिक कैदियोंके हृदयको पानी-पानी कर दिया। सभी कैदी बैरकमें जानेके लिये तैयार हो गये। तभी एक प्रौढ़ उम्रके राजनैतिक कैदीने उठकर कहा– हम सभी बैरकमें जानेके लिये तैयार हैं, पर सबसे पहले ये चार सौ सैनिक तुरंत जेलके बाहर चले जायें।

सहायक जेलरने तुरंत उन सारे सैनिकोंको चले जानेका आदेश दे दिया। उन सैनिकोंके चले जाते ही सारे राजनैतिक कैदी कैम्प-जेलके बैरकमें चले गये। सारे कैदियोंके मुखपर एक ही बात थी कि इस सहायक जेलरने हमलोगोंको मृत्युके मुँहमेंसे निकाल लिया। सारे कैदी इस सहायक जेलरके प्रत्युत्पन्नमतित्व, उसके साहस, उसके सौहार्द, उसकी विनम्रताकी सराहना कर रहे थे।

अपने दिये हुए वचनके अनुसार वह सहायक जेलर कैम्प-जेलके कैदियोंसे मिला, जिससे उनकी कठिनाइयोंकी जानकारी हो सके और फिर उन कठिनाइयोंको दूर करनेकी दृष्टिसे उपाय सोचा जा सके। राजनैतिक कैदियोंसे मिलने और बात करनेमें कुछ दिन तो निकल ही गये। कैम्प-जेलके राजनैतिक कैदी तो यह सोच रहे थे कि हमलोगोंकी शिकायतकी सुनवायी हो रही है, तभी उन सब कैदियोंकी रिहाईका आदेश ऊपरसे आ गया।

महात्मा गाँधीने जो सविनय-अवज्ञा-आन्दोलन आरम्भ किया था, उसका वाइसराय इरविनने कठोरतापूर्वक दमन किया, पर वह यह भी भली भाँति जानता था कि नेताओंको तथा अन्य लोगोंको अनिश्चित समयतकके लिये जेलोंमें नहीं रखा जा सकता। शासन सम्बन्धी सुधारोंकी रूपरेखा निश्चित करनेके लिये नेताओंसे विचार करना आवश्यक था और यह विचार शान्त वातावरणमें ही हो सकता था।

विचारार्थ अनुकूल परिस्थितिका निर्माण करनेके लिये ५ मई १९३१ को वाइसराय इरविनसे समझौता हो गया। इस समझौतेके अनुसार इधर गाँधीजीने अपना सविनय-अवज्ञा-आन्दोलन स्थगित कर दिया, उधर इरविन सरकारने नेताओं सहित सभी राजनैतिक कैदियोंको बिना शर्त रिहा कर देनेका आदेश दे दिया।

इस आदेशके मिलते ही देशके जिस-जिस जेलमें जो राजनैतिक कैदी थे, वे विमुक्त किये जाने लगे। पटनाके फुलवाड़ी शरीफ कैम्प-जेलके जिस भागमें चक्रधर कैद थे, उस भागमें लगभग सात-आठ सौ कैदी रहे होंगे। ये सारे सात-आठ सौ कैदी विमुक्त कर दिये गये, केवल एक चक्रधरको छोड़कर। चक्रधरका कार्ड (PRISONER RECORD CARD अर्थात् बन्दी-विवरण-पत्र) जेल-कार्यालयमें खो गया था। इस कार्डके अभावमें चक्रधर कैम्प-जेलसे विमुक्त नहीं किये गये। अन्य कैदियोंकी विमुक्तिमें कोई अड़चन नहीं आयी, बस, एक चक्रधर कैम्प-जेलमें रोक लिये गये।

कैम्प-जेलमें केवल चक्रधर रह गये थे और केवल चक्रधरके लिये तो कैम्प जेल रहेगा नहीं। राजनैतिक कैदी लोग बहुत बड़ी संख्यामें थे, अतः इनको कैद करनेके लिये यह एक अस्थायी व्यवस्था कैम्प-जेलके रूपमें की गयी थी। इन राजनैतिक कैदियोंके विमुक्त होते ही यह कैम्प-जेल उठा दिया जाता। कैम्प जेलके उठा दिये जाते ही चक्रधरको पुनः गया जेलमें भेज दिया जाता। वापस गया जेल जाना पड़ेगा, यह विचार आते ही चक्रधरका तन-मन सिहर उठा। गया जेलकी नृशंस यातनाएँ, पैशाचिक व्यवहार, राक्षसी वातावरण, यह सब चक्रधरकी आँखके सामने नाचने लगे, पर अब कोई उपाय भी नहीं था। कैम्प-जेलमें अकेले पड़े चक्रधर इन विचारोंमें बहते हुए भाग्यकी क्रूर रेखाओंको देख-देख करके बहुत व्याकुल हो रहे थे। उस व्याकुलतामें एक मात्र सहायक थे भगवान ही, उन्हीं भगवानसे रक्षाके लिये चक्रधर मूक प्रार्थना करने लगे।

कैम्प-जेलके राजनैतिक कैदी लोग जेलसे बाहर आकर बड़े प्रसन्न हो रहे थे, उनके आनन्दकी सीमा नहीं थी। बस, उस उल्लासमें एक बात बार-बार चुभ रही थी कि हमारा एक युवक साथी

चक्रधर मिश्र विमुक्त नहीं हो सका। श्रीगुप्तेश्वर प्रसादजी मिश्र बिहारके प्रमुख राजनैतिक कार्यकर्ता थे। श्रीगुप्तेश्वरजी स्वयं कैम्प-जेलमें थे। सब विमुक्त कैदियोंसे उनका हाल-चाल पूछते हुए जब श्रीगुप्तेश्वरजीको यह पता चला कि चक्रधर मिश्रकी विमुक्ति, कार्ड खो जानेके कारण नहीं हो पायी है तो वे बड़े चिन्तित हुए। श्रीगुप्तेश्वरजी स्वयं समझ रहे थे कि विमुक्ति नहीं होनेसे उसे वापस गया जेलमें जाना पड़ेगा और वहाँ तो जानका ही खतरा है। श्रीगुप्तेश्वरजी तुरंत सहायक जेलरके पास गये और उनसे कहा– आप चक्रधर मिश्रको रिहा कर दें। वह राजनैतिक बन्दी है। उसका कार्ड उसके द्वारा नहीं, बल्कि आपके जेल-कार्यालयके कर्मचारी द्वारा खो गया है। बस, इसी कारण उसको रोक लिया गया है।

उन सहायक जेलरने कहा– अब तो सूर्यास्त एकदम समीप है। इस समय कुछ भी नहीं किया जा सकता। जो कुछ भी होगा, वह अब कल ही हो पायेगा।

सारी बात कलके लिये स्थगित हो गयी। श्रीगुप्तेश्वरजी चक्रधरको अच्छी तरह जानते थे। वे कैम्प-जेलमें चक्रधरके पास आये। उन्होंने चक्रधरको बड़ी सान्त्वना दी और कहा– तुम किसी प्रकारकी चिन्ता मत करना। मुझे पूरी आशा है कि कल तुम्हारी विमुक्ति हो जायेगी। अब सूर्यास्त होनेवाला है, अतः जेलके नियमके अनुसार अब कुछ कर सकना सम्भव था ही नहीं।

श्रीगुप्तेश्वरजी सान्त्वना देकर चले गये, पर कैम्प-जेलकी वह काली रात चक्रधरके लिये बड़ी त्रासदायक सिद्ध हुई। भावी विपत्तियोंकी सम्भावनाके भयप्रद चित्रोंसे चक्रधरका मन रातभर बड़ा संत्रस्त रहा। चक्रधर कल्पना भी नहीं कर पा रहे थे कि कार्डके अभावमें श्रीगुप्तेश्वरजी किस प्रकारसे विमुक्ति दिला देंगे।

दूसरे दिनका सूर्योदय हुआ। कार्यालयके खुलनेका समय होते ही श्रीगुप्तेश्वरजी कैम्प-जेलमें चक्रधरके पास आये। वे चक्रधरको साथ लेकर कार्यालयमें गये। कार्यालयके सभी कर्मचारी श्रीगुप्तेश्वरजीके सम्मानमें खड़े हो गये। सभी जानते थे कि जेलर साहबसे इनकी खूब पटती है, ये जेलर साहबके साथी हैं और ये प्रमुख राजनैतिक कार्यकर्ता हैं।

कार्यालयमें पहुँचते ही जेलर साहबने श्रीगुप्तेश्वरजीको बैठनेके लिये कुर्सी दी, इसके साथ ही चक्रधरको भी। चक्रधरकी सब बात श्रीगुप्तेश्वरजीने उन जेलर साहबको समझायी। सारी बात सुनकर जेलर साहब कोई रास्ता सोचने लगे। जेलर साहबने चक्रधरसे पूछा— क्या तुमको अपने कार्डका लगभग क्रमांक (APPROXIMATE NUMBER) याद है।

चक्रधरने तुरंत कहा— लगभग क्रमांक नहीं, बल्कि एकदम सही-सही क्रमांक याद है।

चक्रधरने अपने कार्डका क्रमांक बता दिया। अब उन जेलर साहबने अपना अभिमत (REMARK) व्यक्त करते हुए लिखा— जेलके कार्यालयमें चक्रधर मिश्रका कार्ड खोजनेपर नहीं मिला। ऐसा लगता है कि वह कार्ड किन्हीं कागजोंमें अथवा किसी फाइलमें दब गया है। कार्डके नहीं मिलनेमें हमारे कार्यालयकी गलती है। कार्डके अभावमें कैदीको विमुक्त करना उचित नहीं, पर विमुक्त नहीं करनेसे ऐसे जनक्षोभकी आशंका है, जिससे उस उद्देश्यकी हानि हो सकती है, जिस उद्देश्यको लेकर सारे राजनैतिक कैदी विमुक्त किये जा रहे हैं। चक्रधर मिश्र एक राजनैतिक कैदी है। इसका कार्ड नम्बर इतना है। पर इसका कार्ड खो गया है। कार्डके न होनेके बाद भी शासनके हितमें चक्रधर मिश्रको विमुक्त किया जाता है।

उन सहायक जेलरने चक्रधरकी विमुक्तिका आदेश दे दिया। चक्रधरको साथ लेकर श्रीगुप्तेश्वरजी कैम्प-जेलसे बाहर आये। बाहर कुछ साथी लोग उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा कर ही रहे थे। चक्रधरकी विमुक्तिसे सभीको बड़ी प्रसन्नता हुई।

इस जेल-जीवनमें चक्रधरको पद-पदपर प्रभुकृपाकी दिव्यानुभूति हुई। प्रभुकी अपार और अहैतुकी कृपाको देखकर चक्रधरकी विचारधारा बहुत बदल चुकी थी। जेलमें ही चक्रधर सोचने लगे थे कि जेलसे बाहर जानेके बाद जीवनको साधनामय बना देना है। जेलके विचित्र और विविध अनुभव ही चक्रधरके भावी आध्यात्मिक जीवनके अनुप्रेरक हैं।*

* * *

*जेल-यात्राके विवरणको विराम देनेके पूर्व एक बातका निवेदन करना आवश्यक लग रहा है। बाबाको दो बार जेल जाना पड़ा और पहली बार छः मासकी तथा दूसरी बार पाँच

जेल-जीवनकी बातें बतलाते हुए परमादरणीय श्रीरामाश्रयरायजी वकीलने बतलाया था— जेलमें सर्वप्रथम मुझे श्रीचक्रधर मिश्रसे परिचय हुआ था। यह बात सन् १९३० की है। साधारण पहनावावाले चक्रधर मिश्र जिला-स्कूलके विद्यार्थी थे। उनकी बुद्धि बड़ी तीक्ष्ण थी और स्मरणशक्ति अनोखी। वे स्वभावसे बहुत सरल थे। साहित्यके प्रति उनकी रुचि अच्छी थी। मैं ग्रेजुएट था और जेलमें मैं श्रीचक्रधर मिश्र, श्रीमदनमोहन सिंह तथा श्रीगुप्तेश्वर सिंहको पढ़ाता भी था। उनकी हैण्डराइटिंग बहुत सुन्दर थी। धार्मिक तथा साहित्यिक पुस्तकें पढ़नेका शौक था। जेलमें हमलोग एक ही हालके अन्दर रहते थे। बिछावनमें एक कम्बल मिला था। खानेके लिये सबेरे ग्यारह बजे दाल-भात-सब्जी और शामको पाँच बजे रोटी और सब्जी मिलती थी।

* * *

चक्रधरके मित्र श्रीमदनमोहन सिंहजीके भाव-भरे उद्‌गार हैं— वे हिन्दी और अँग्रेजी धारा-प्रवाह बोलते थे। व्यक्तिगत सुख-साधनकी ओर उनका ध्यान बहुत कम रहता था। वे प्रायः देशसेवा-समाजसेवाके कार्यको ईमानदारी पूर्वक करनेके लिये कहा करते थे। राँचीके श्रीरामरक्षाजी ब्रह्मचारी जेलमें गीताका क्लास लिया करते थे। उस क्लासमें श्रीचक्रधर मिश्रके साथ मैं भी जाया करता था। गीतादर्शनपर प्रायः हम दोनोंके बीच वाद-विवाद होता रहता था। लोकमान्य तिलकका 'गीता-रहस्य' उन्होंने जेलमें ही पढ़ लिया था। व्यंग्यचित्रकार

मासकी सजा भोगनी पड़ी। बाबा अपने जेल-जीवनका कभी कोई अंश, कभी कोई अंश यदा-कदा सुनाया करते थे। बाबाके बड़े भाई पूज्य श्रीतारादत्तजी मिश्रसे भी कुछ-कुछ बातें दो बार सुननेको मिली हैं। बाबाके जेलके साथियोंसे भी जेल-जीवनका विवरण एक-आध बार सुननेको मिला है। जब-जब जो-जो थोड़ा-थोड़ा सुननेको मिला है, उसीको स्मरण करके यह विवरण लिखा गया है। लिखते समय दो-तीन स्थलोंपर तथ्योंके क्रमको निर्धारित करनेमें बड़ी कठिनाई उत्पन्न हुई। यह निश्चित करना कठिन हो गया कि अमुक प्रसंग प्रथम जेल-यात्राका है अथवा द्वितीयका। जो भी हो, लिखते समय यह प्रयास भरपूर रहा है कि तथ्यों एवं प्रसंगोंका वर्णन पूर्णतः सही हो। इसके बाद भी यदि विसंगति अथवा चूक रह गयी हो तो उसके लिये विनम्र क्षमा-प्रार्थना है।

(Caricaturist) के रूपमें इनकी अच्छी ख्याति थी। ये जानवरोंकी बोलियाँ भी बोलते थे, जिसे सुनकर हमलोग हँस पड़ते थे। वे प्रायः राष्ट्रीय गीत गाया करते थे।

* * * * *

पुनः विद्यार्थी-जीवन

५ मई १९३१ का गाँधी इरविन समझौता हुआ था और इस समझौतेके फलस्वरूप चक्रधर जेलसे बाहर आ गये। अब प्रश्न चक्रधरके सामने था कि भावी जीवनका स्वरूप क्या हो। जेलके भीतर अतिक्रूर एवं कष्टपूर्ण परिस्थितियोंमें चक्रधरको पद-पदपर भगवत्कृपाके अनेक अद्भुत दिव्यानुभव हुए थे। इन चिरस्मरणीय दिव्यानुभवोंके कारण जेलमें चक्रधरके मनमें इस प्रकारके विचार आने लग गये थे कि भविष्यमें अध्यात्मपूर्ण जीवन व्यतीत करना है। जेलसे बाहर आनेके बाद बड़े भाइयोंका दबावभरा आग्रह था कि तुम विद्यालयमें नाम लिखवाकर विद्यार्जन करो। चक्रधर इस आग्रहके समक्ष नतमस्तक थे। नतमस्तक थे इसलिये कि गुरुजनोंकी आज्ञा माननी चाहिये और नतमस्तक थे इसलिये भी कि विद्यार्जन एवं अध्ययन आध्यात्मिक जीवनमें सहायक होगा।

उनके बड़े भाई लोग उन्हें कलकत्ते ले गये और वहाँ सन् १९३२ में उनका नाम सोहरावर्दी बेगम मेमोरियल स्कूलकी नवीं कक्षामें लिखा दिया।

सन् १९३४ में चक्रधरने मैट्रिक परीक्षा प्रथम श्रेणीमें उत्तीर्ण की। इसके बाद घरवालोंने उनका नाम रिपन कालेज (अब सुरेन्द्रनाथ महाविद्यालय) के इण्टरमीडियेट कला (ARTS) में लिखवा दिया। सन् १९३५ में चक्रधरने प्रथम वर्षकी कक्षा उत्तीर्ण कर ली। अब चक्रधर कालेजमें कला विभागके द्वितीय वर्षके छात्र थे। चक्रधर कालेजके छात्र तो थे, परन्तु घरपर अपने परिवारके बच्चोंको भिन्न-भिन्न विषय कभी-कभी पढ़ाया भी करते थे। चक्रधरने अपनी पाठ्य पुस्तकें नहीं खरीदीं। उनको पाठ्य पुस्तकोंकी जरूरत भी नहीं थी। उनके पास एक मोटी कापी थी। क्लासमें पढ़ते समय उसी कापीपर नोट लिख लिया करते थे और वह नोट उनके लिये पर्याप्त होता था।

कालेजसे आनेपर वे कापीको लापरवाहीके साथ एक किनारे रख दिया करते थे और फिर श्रीमद्भगवद्गीता पढ़नेके लिये बैठ जाते थे। श्रीमद्भगवद्गीताकी इस पोथीमें डा.एनी वेसेन्ट द्वारा किया गया अँगरेजी अनुवाद भी था। वे घरके दरवाजेपर बैठकर अपनी गीताकी पुस्तक खोल लेते और तबतक पढ़ते रहते, जबतक अन्धकारमें पढ़ना असम्भव नहीं हो जाता। चक्रधर अपने पूज्य भाई पं.श्रीदेवदत्तजी मिश्रसे सांख्य और वेदान्त भी पढ़ा करते थे।

एकान्तमें चक्रधर श्रीमद्भगवद्गीताके श्लोकोंपर गम्भीरतापूर्वक मनन करते रहते। प्राणीमात्रमें भगवद्दर्शन करनेकी साधनाका आरम्भ विद्यार्थी-जीवनमें ही हो गया था। श्रीगीताजीका एक श्लोक मन-मस्तिष्कपर छाया रहता।

मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनंजय।
मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव॥

(श्रीगीता– ७/७)

(हे धनंजय! मेरे सिवाय किञ्चित् मात्र भी दूसरी वस्तु नहीं है। यह सम्पूर्ण जगत सूत्रमें सूत्रकी मणियोंके सदृश मेरेमें गुँथा हुआ है।)

श्रीगीताजीके इस श्लोकके आधारपर चक्रधरकी यह आस्था थी कि जिस प्रकारसे सूतकी माला देखनेमें वह एक माला है, पर उसके भीतर-बाहर सूत- ही-सूत है, उसी प्रकार चाहे स्त्री हो या पुरुष हो, चाहे बालक हो या वृद्ध हो, चाहे चर हो या अचर, सभीमें एकमात्र भगवान ही हैं। उनके विद्यार्थी जीवनमें यह विश्वास गहरा होता चला जा रहा था कि सबमें सर्वत्र भगवानके अतिरिक्त कुछ है ही नहीं। यह विश्वास बहुत अधिक मूर्त और सक्रिय हो उठता था ट्रेनसे यात्रा करते समय। प्रायः ऐसा होता है कि जब रेलगाड़ी किसी स्टेशनके प्लेटफार्मपर पहुँचती है तो ट्रेनके भीतर बैठे हुए यात्री डिब्बेके दरवाजे तथा खिड़की बन्द कर लेते हैं, जिससे बाहरके लोग डिब्बेके अन्दर न आ सकें तथा भीतरके यात्री सुविधा तथा आराम पूर्वक बैठकर यात्रा कर सकें। अधिकांश यात्रियोंकी मनोवृत्ति ऐसी ही होती है, पर विद्यार्थी जीवनमें चक्रधरका ढंग अलग ही था। ट्रेनसे यात्रा करते समय प्लेटफार्मके आनेपर चक्रधर डिब्बेके दरवाजेको खोल दिया करते थे, जिससे जिसको चढ़ना हो, वह चढ़ जाय। यह चीज उनके विद्यार्थी जीवनमें इतनी अधिक घर कर गयी थी कि वे यात्रा करते समय हर स्टेशनके प्लेटफार्मपर दरवाजा खोल दिया करते थे।

इसके फलस्वरूप डिब्बेमें लोगोंकी भीड़ हो जाया करती थी। फाटकके खोल देते ही डिब्बेके भीतर बैठे हुए यात्रीगण बहुत नाराज होते थे और बड़े ही किचकिचाते थे, पर चक्रधर हँसते रहते थे। चक्रधरको यह अच्छा नहीं लगता था कि प्लेटफार्मपर खड़े यात्री अपनी यात्रासे वंचित रहें। डिब्बेके यात्री कुछ कष्ट सह लेंगे, पर जो बाहर खड़े हैं, उनको भी डिब्बेके भीतर कुछ जगह, कम-से-कम खड़े रहनेके लिये स्थान मिल ही जायेगा। भले ही डिब्बेके यात्री बहुत नाराज होते, पर चक्रधर चुपचाप सह लेते।

सन् १९३२ से कलकत्तेमें पुनः चक्रधरके विद्यार्थी जीवनका आरम्भ हुआ और वहाँके जीवनने भी चक्रधरको उपरामताका ही पाठ पढ़ाया। कलकत्ता आनेके पूर्व राजनैतिक और सामाजिक कार्य करते समय कार्यकर्ताओंके मध्य स्पर्धा-वैमनस्य-आपाधापी-स्वार्थसिद्धि-आत्मश्लाघा आदि देखकर चक्रधरको निराशा ही मिली थी, कलकत्ते आनेके बाद आत्मीय कहलानेवाले स्वजनोंके मध्य भी वही सब बातें मिलीं। इतना ही नहीं, स्वजनवर्गसे प्रवंचना एवं प्रतिकूलता और अधिक मिली। चक्रधर बतलाया करते थे कि उन्होंने जिन-जिनको अपना निकट-से-निकट अभिन्नहृदय माना, उनमेंसे चार व्यक्तियोंको छोड़कर अन्य सभीने उनके विश्वासको आघात ही पहुँचाया। इन चार व्यक्तियोंमें दो तो उनके बड़े भाई हैं, जिनके साथ वे कलकत्तेमें रहते थे तथा दो अन्य जन हैं। इन चार व्यक्तियोंके अतिरिक्त अन्य सभी लोगोंसे मिलनेवाली प्रवंचना एवं प्रतिकूलताने चक्रधरके मनको विरक्तिके भावोंसे भर दिया और यह विरक्तभावना अधिकाधिक बढ़ती ही चली गयी।

एक और घटना है, जिससे चक्रधरका हृदय काँप उठा। एक विधवा स्त्रीने पर-पुरुषकी अभिलाषाको पूर्ण करनेके लिये अपने वयस्क पुत्रको विष दे दिया। हाय, इतना घोर अधःपतन, ऐसा कठिन कलिकाल! अपने चारों ओर स्वार्थपरायणता और अनैतिकताकी प्रबलताको देखकर चक्रधरका मन जगतसे उचट गया।

जगतके इन कटु प्रसंगोंने ऐसी पृष्ठ-भूमिका निर्माण कर दिया, जहाँ चक्रधरके पूर्व जन्मकी आध्यात्मिक निधि और इस जन्मके आध्यात्मिक संस्कार स्वतः ही प्रस्फुटित एवं पल्लवित होने लग गये। कुछ तो सत्त्व-निधि मिली थी चक्रधरको माता-पितासे। सत्य तो यह है कि चक्रधरके पिताश्री भी संत ही थे। उनको तो गृहस्थ जीवन गुरुजनोंकी आज्ञा-पालनके रूपमें विवशतः अंगीकार

करना पड़ा था, अन्यथा विरक्त वेषमें भक्त-जीवन ही उन्हें अभीष्ट रहा। चक्रधरकी माताजी भी थीं संत-स्वभावा एवं भक्त-हृदया। पूर्व जन्मकी आध्यात्मिक निधिके अतिरिक्त इस जन्ममें संत-भाव-निधि तो चक्रधरको माता-पितासे सहज ही प्राप्त हो गयी थी। इसे विकासोन्मुख बनाया दो सिद्ध संतोंके दरस-परसने। इन संतोंसे चक्रधरकी भेंट हुई थी बाल्यावस्थामें और किशोरावस्थामें। चार वर्षकी आयुमें द्वारपर आये हुए एक संतके दृष्टिपातसे चक्रधरमें ऐसा परिवर्तन अकस्मात् हो गया कि वे अन्य बालकोंके साथ खेलना छोड़कर स्थिर आसनसे आँख मूँदे हुए बैठ गये और उनके बहुत देरतक होता रहा अविरल अश्रु-प्रवाह एवं अनवरत नाम-जप। पन्द्रह वर्षकी आयुमें गयाके दिगम्बर अवधूत साधुके स्पर्श मात्रसे चक्रधरमें ऐसा परिवर्तन स्वाभाविक हो गया कि उनके चित्तकी चञ्चलता प्रशमित हो गयी और वे क्रमशः बन गये संत-जीवनके प्रशंसक। जेल-जीवनके अद्‌भुत दिव्यानुभवोंने भी संत-जीवनको स्वीकार करनेकी प्रबल प्रेरणा प्रदान की थी।

* * * * *

भगवान के नाम पत्र लिखना

चक्रधरकी एक व्यक्तिगत डायरी थी। यह डायरी वे किसीको दिखलाते नहीं थे। उस डायरीके ऊपर श्रीमद्भगवद्‌गीताका श्लोक लिखा था—

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम्॥

(श्रीगीता— ९/२७)

(हे अर्जुन! तू जो कुछ कर्म करता है, जो कुछ खाता है, जो कुछ हवन करता है, जो कुछ दान देता है, जो कुछ धर्माचरण रूप तप करता है, वह सब मेरे अर्पण कर!)

चक्रधर मध्य रात्रिके समय भगवानके नाम पत्र लिखा करते थे। कलकत्ते आनेके बाद ही इस प्रकारके पत्रोंको लिखना चक्रधरने आरम्भ कर दिया था। पत्र लिख चुकनेके बाद चक्रधर स्थिर बैठ जाते तथा आँखें मूँदकर भगवानका ध्यान करते थे। उस ध्यानमें ही वे पत्र भगवानको अर्पित कर दिया करते थे। चक्रधर यह भावना किया करते थे कि भगवान मेरे पत्रको पढ़ रहे हैं। इन पत्रोंका लेखन १ जनवरी १९३४ से आरम्भ हुआ और १४ अक्टूबर १९३५ तक

पत्रोंका लेखन-कार्य चलता रहा।

उन पत्रोंमें रहते थे मनके परम ऐकान्तिक उद्‌गार। गुरुजनोंके सम्पर्कसे तथा ग्रन्थोंके अध्ययनसे हृदयमें जो आदर्श स्थिर थे, माता-पिता-पत्नी-भाई-बहिन-मित्र-देश-धर्म-समाज आदिको लेकर मस्तिष्कमें जो विचार उठते थे, लक्ष्य-सिद्धि हेतु प्रयत्न करते समय पद-पदपर जो बाधाएँ आती थीं, परिस्थितियोंकी प्रतिकूलताके कारण मनमें जो झंझावात उभरते थे, नैतिकता-मानवताके ह्रास और हानिको देखकर जो खिन्नता होती थी, उन सबका ही भगवानके नाम लिखे गये पत्रमें वर्णन होता था। पत्रमें यह सारा निवेदन करके चक्रधर भगवानसे यही प्रार्थना करते थे कि मेरे जीवनमें सत्यकी प्रतिष्ठा करो, मेरे भीतर और बाहर सत्य-ही-सत्य हो, मेरे जीवनको सात्त्विक बना दो, मेरे जीवनको अमृतमय बना दो, मेरे जीवनको सुन्दर बना दो, मेरा जीवन आदर्शोंसे एकाकार हो जाये, मुझे प्रकाश दो, मुझे सच्ची राह बताओ, मुझे सच्ची शान्ति प्रदान करो! ये पत्र ऐसे थे, जिनमें था चक्रधरके आर्त मनमें उठनेवाले भावों एवं विचारोंका यथार्थ चित्रण, अशान्ति और निराशासे परिपूर्ण हृदयकी व्यथाभरी गाथा, आकुल अन्तरके अश्रु-विमोचनकी संतप्त आर्द्रता, सत्य जीवनकी प्राप्तिके लिये उत्कट लालसा, बाधाओंको दूर करनेके लिये कातर प्रार्थना और ईश्वरीय प्रकाशकी प्राप्तिके लिये प्रतिक्षण प्रतीक्षा।

(चक्रधर द्वारा लिखे गये इन पत्रोंका संग्रह 'अन्तर्वेदना' *नामक पुस्तकके रूपमें प्रकाशित हो चुका है। इस पुस्तकमें कुल २०४ पृष्ठ हैं।)

नीचे पाँच पत्र उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किये जा रहे हैं—

(१)

दिनांक १.१.३४

अनन्त प्रेमार्णव!

लगा दो पार नाथ! नाव पुरानी है, केवट नादान है, पाल टूट गये हैं और आ पड़ा हूँ मझधारमें। किनारा नहीं सूझता विभो! दयामय! तुम्हारी एक नजर पार लगा देगी। आओ, आओ, करुणामय!

तुम्हारा ही

---

*श्रीचक्रधर मिश्र (राधाबाबा) द्वारा लिखे गये इन पत्रोंका संग्रह 'अन्तर्वेदना' नामक पुस्तकके रूपमें हनुमानप्रसाद पोद्दार स्मारक समिति, पो. गीतावाटिका, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित हो चुका है।

(२)

दिनांक ३.१.३४

भावनामय!

भवसागरकी तरल तरंगोंने मुझे मृतप्राय बना डाला है। इसकी उद्दण्ड हिलोरोंसे मैं तंग आ गया हूँ। जीवन ज्योति लुप्त हो गयी है। सहारेके लिये हाथ पसारनेपर लोग ठुकरा देते हैं। हृदय खीरा नहीं है, जिसे दयामय! उन्हें मैं फाड़कर दिखा सकूँ। संसार मुझसे घृणा करता है, पर तुम तो अनाथोंके नाथ हो। विभो! सर्वेश! मेरी रत्ती-रत्तीका तुम्हें ज्ञान है। बिखेर दे भक्तभयहारी! ऐसी चाँदनी, जिसमें मैं देख सकूँ अपना पथ। अन्तर्दाहकी शांति तुम्हारे सिवा और कौन दे सकता है? हृदय जल रहा है, अस्थिमात्र अवशेष है, कुछ दिनोंके बाद यह अस्थि-पिंजर भी, हृदयकी उस विषम ज्वालाकी लपटमें पड़कर भस्मसात हो जायगा। हो जाय, इसका भय नहीं। केवल विनय है नाथ! मुझे अपने चरणोंसे विलग न करना। मेरे एक मात्र आधारको हमसे न छीनना। न छीनना दयामय! न छीनना। भिक्षास्वरूप अपना चरण मुझे दे दो। अपनी टेक मत छोड़ो करुणानिधि! और एक बारके लिए ही चमका दो अपनी दिव्य ज्योति।

(३)

दिनांक २०.१.३४

अनन्त!

तुममें लीन हो जाना ही पूर्ण आनन्दका अनुभव करना है। संसार असार है। सब कुछ अनिश्चित है। तुम केवल निश्चित हो। विभो! ले लो मुझे चरणोंमें।

(४)

दिनांक २२.१.३४

दयामय!

जो कुछ भी कर रहा हूँ उसे तुम्हें नाथ! अर्पण करता हूँ। तुम मेरी इस क्षुद्र भेंटको स्वीकार करना। नाथ! क्षुद्र भावनाओंको लेकर आया हूँ। उसे तुम्हींपर चढ़ा दे रहा हूँ। इसे न ठुकराना।

प्रेमार्णव! तुम्हीं एक सार हो और सब कुछ असार है। तुम्हारी मधुर मुस्कानकी आभा प्रत्येक कणमें है विश्वेश! उद्धार करो।

(५)

दिनांक २३.१.३४

नटवर!

विनय मेरी तुमने सुनी है। नाथ! तुम्हारी पवित्र मुस्कानका आभास मुझे मिल रहा है। नाथ! सब कुछ तुममें अर्पण करता हुआ तुम्हारी शरणमें आया हूँ। शरणसे विलग न करना।

शरणागतपाल!

दुःखसे जर्जर जीवनकी शांति तुम्हारे पास है। नाथ! माँगता हूँ एक चीज। नाथ! दुःख-सुखमें मेरे भाव एक हो जायँ, पूर्णतया कर्मफलका त्याग कर सकूँ और समझ सकूँ सर्वदा ही कि जो कुछ मैं करता हूँ, वह तुम्हारा है— मैं साधन मात्र हूँ। विशेष विनय!

* * * * *

संन्यास ग्रहण

पत्रोंको लिखनेका क्रम निरन्तर चलता रहा। एक बार ध्यान करके जब चक्रधरने पत्र अर्पित किया तो बहुत मधुर स्वरमें किसीकी वाणी सुनायी पड़ी— तुम संन्यास ले लो। तुम्हारे सम्पूर्ण दुःखों एवं अशान्तिका सदाके लिये नितान्त अभाव हो जायेगा।

चक्रधरको किसीकी आकृति दिखलायी नहीं दी, परंतु इतना तो इन्हें स्पष्ट अनुभव हुआ कि वह वाणी लौकिक नहीं थी। चक्रधरने इसे ईश्वरीय आदेश माना और उन्होंने संन्यास लेनेका संकल्प कर लिया।

चक्रधरने बड़े भाईको सन् १९३५ के सितम्बर मासमें सूचना दे दी कि मैं एक मास बाद संन्यास ले लूँगा। चक्रधरके स्वभावको देखते हुए ऐसा लगता है कि संन्यास लेनेका ईश्वरीय संकेत बड़े भाईको सूचना देनेसे दो-तीन मास पूर्व चक्रधरको मिला होगा। ईश्वरीय संकेत मिलनेके बाद चक्रधरने अवश्य ही संन्यासकी प्रक्रिया एवं संन्यासी जीवनचर्यासे सम्बन्धित तथ्योंको भली-भाँति

जान लेनेका प्रयास किया होगा। तथ्योंकी पर्याप्त जानकारी हो जानेके बाद ही चक्रधरने अपने निश्चयकी सूचना बड़े भाईको दी होगी।

घरमें सभीकी सुख-सुविधाका ध्यान रखना, बालकोंकी शिक्षाका प्रबन्ध करना, आयके साधनोंको जुटाना, परिवारके प्रश्नोंको सुलझाना आदि सब कार्य मुख्यतः परमादरणीय पण्डित श्रीदेवदत्तजी मिश्र करते थे, जो चक्रधरके बड़े चचेरे भाई थे। कलकत्तेमें पण्डित श्रीदेवदत्त मिश्रके साथ ही पं. श्रीतारादत्तजी तथा चक्रधर रहा करते थे। एक दिन अकस्मात् चक्रधरने संन्यासकी सर्वप्रथम सूचना श्रीदेवदत्तजीको देते हुए कहा— भैया! प्रभुकी इच्छा है कि मैं गृहस्थ-जीवनका, संसारका परित्याग करके संन्यास ले लूँ।

वहींपर इस सूचनाको सुना सहोदर बड़े भाई श्रीतारादत्तजीने भी। संन्यासकी सूचना भाइयोंके लिये एक वज्रपात ही था। भाई लोग यह तो देखते थे कि आजकल चक्रधर अनमना-सा रहता है, प्रायः श्रीमद्भगवद्गीताका स्वाध्याय करता रहता है, आध्यात्मिक ग्रन्थोंमें इसकी रुचि रहती है, अपने विचारोंमें निमग्न रहता है, उसकी मननशीलता बहुत बढ़ गयी है, मित्रोंके साथ बड़ा विनम्र रहता है, पहलेकी अपेक्षा उसके आचार-विचार-व्यवहारमें परिवर्तन आ गया है, पर वे लोग इस बातकी कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि वह संन्यास लेनेवाला है। यदि भाई लोग उसके गम्भीर स्वभावके बारेमें उससे कुछ पूछते थे तो चक्रधर केवल मुस्करा देते थे, पर वे मनकी बात नहीं बताते थे। संन्यासकी सूचनाके मिलते ही दोनों भाई अवाक् रह गये। श्रीतारादत्तजी तो बहुत उद्विग्न हो उठे। कुछ देरतक दोनों भाई तथा चक्रधर, तीनों ही चुप रहे। थोड़ी देर बाद परिवारके एक वरिष्ठ व्यक्तिके रूपमें श्रीदेवदत्तजीने चक्रधरसे कहा— चक्रधर! यह तुम क्या पागलकी तरह बात कर रहे हो? क्या ऐसा सोचना और कहना उचित है? चित्तको स्थिर और शान्त करो। अभी तुम निरे अबोध बालक हो। तुम्हारी अवस्था संन्यास-धर्मके योग्य नहीं है।

यह सुनकर चक्रधरने कहा— संन्यास लेनेका मैंने अन्तिम निर्णय कर लिया है।

चक्रधरकी बात सुनकर भाइयोंके हृदय आशंकासे भर गये। उन लोगोंको ज्ञात था कि चक्रधर कभी अनर्गल बात अपने मुँहसे नहीं निकालता और जो वह कहता है, करके ही रहता है। छोटे भाई चक्रधरके निर्णयकी

जानकारी होते ही बड़े भाई सोचने लगे कि इस समय इसकी आयु मात्र २२ वर्ष है। ऐसी कच्ची आयुमें इसका संन्यास-व्रत कैसे निभ पायेगा? इसको कैसे समझाया जाये कि मनकी वासनाओंका वेग कितना विकट हुआ करता है। गाँवमें घरपर इसकी पत्नी है, माताजी हैं, पिताजी हैं। इस समाचारसे उन सभीपर क्या बीतेगी? अभी तो इसने अपनी पढ़ाई भी पूरी नहीं की है। संन्यासका निर्णय लेकर चक्रधरने तो बड़ा ही अविवेकपूर्ण कार्य किया है।

चचेरे बड़े भाई श्रीदेवदत्तजीने पुनः बड़े प्यारसे समझाते हुए चक्रधरसे कहा— तुम्हारे लिये संन्यास-धर्म कठिन पड़ेगा। संसारके भोगोंकी क्षणभंगुरता एवं निरर्थकताका सच्चा अनुभव एक भुक्त-भोगीको ही हो पाता है। जिसे ऐसा अनुभव नहीं होता, उनका वैराग्य क्षणिक हुआ करता है। जिसने आवेशमें आकर संन्यास ले लिया है, वह भविष्यमें काम-क्रोधादि विकारोंके वशीभूत होकर यदि अपने पथसे च्युत होता है तो ऐसे पथ-भ्रष्ट संन्यासीका परमार्थ तो सिद्ध होता ही नहीं है, उसके लोक और परलोक भी बिगड़ जाते हैं। इसीलिये अपने ऋषियोंने यह मर्यादा निर्धारित की है कि मनुष्यको तीन आश्रमोंके सोपानोंको पार करनेके बाद ही संन्यासी जीवन स्वीकार करना चाहिये। इतना ही नहीं, महज्जनोंका यह भी कथन है कि घरपर जबतक माता-पिता हों, तबतक पुत्रको संन्यास नहीं लेना चाहिये।

सभीने बड़ा प्रयास किया कि चक्रधर संन्यासके विचारका परित्याग कर दे, किन्तु सारे प्रयास व्यर्थ गये। चक्रधरका निश्चय था अडिग शिला-खण्ड। स्वजन या स्नेही या मित्रोंकी ओरसे जब-जब ममत्व, भय, प्रलोभन, दबाव अथवा सुझावके रूपमें जो-जो भाव-लहरियाँ आती थीं, उस शिला-खण्डसे टकराकर बिखर जाती थीं और इन व्यक्तियोंको क्या पता कि चक्रधर तो ईश्वरीय आदेशका पालन मात्र कर रहा है। जब सारे प्रयत्न असफल हो गये और बड़े भाई श्रीतारादत्तजीने देखा कि चक्रधर अपने निश्चयपर अटल है, तो उन्होंने घरपर माता-पिताजीको उनके संन्यास लेनेके निर्णयकी सूचना भेज दी। गाँवपर माताजी-पिताजी तथा परिवारके अन्य लोग बड़े व्यथित हो उठे। सूचना मिलते ही माता-पिता कलकत्ते आनेके लिये तैयार हो गये, जिससे वे अपने पुत्र चक्रधरको समझा-बुझा सकें। माता-पिता कलकत्ते आनेवाले हैं, यह जानकारी होते ही चक्रधरने अपने बड़े भाईसे कहा— आप माताजी-पिताजीको आनेसे मना कर दें। यदि माता-पिताजी आ